an>

Title: Need to evolve an effective mechanism to deal with incidents of communal violence in the country.

HON. SPEAKER: Now we take up the discussion under rule 193 on the need to evolve an effective mechanism to deal with incidents of communal violence in the country. Shri Mallikarjun Kharge.

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) :** मैडम स्पीकर, इस विषय पर चर्चा के लिए बहुत दिनों से कोशिश हो रही थी, लेकिन इसे बहुत दिनों के बाद आपकी सहमति मिली है. इसलिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं कि सैशन के आखिरी दिनों में तो कम से कम यह विषय यहां पर आया है। इसकी गम्भीरता को देखने के बाद यह विषय पहले भी ले सकते थे, क्योंकि भारत देश में हर कोने-कोने में आज ...(व्यवधान) Madam, the Home Minister is not here.

**माननीय अध्यक्ष :** राज्य मंत्री अभी बैठे थे, यहीं हैं, आ रहे होंगे।

...(*Interruptions*)

**माननीय अध्यक्ष :** अभी राज्य मंत्री यहां बैठे थे। बाकी दूसरे मंत्री इसका नोट ले लें।

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Madam, if the Cabinet Minister is engaged in the other House or somewhere else, at least the Minister of State should be present here and while replying to the debate, the Cabinet Minister can reply. The Government is taking it lightly.

HON. SPEAKER: Nobody is taking it lightly. The Minister of State for Home Affairs was here just now.

...(*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Madam, I do not want to speak now. You can take it up later when the Minister is present. Till then you may adjourn the House for half-an-hour or so. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 4 o'clock.

**15.29 hrs**

*The Lok Sabha then adjourned till Sixteen of the Clock.*

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI KIREN RIJIJU): Sir, the hon. Home Minister was having a small problem in health and so, we got a small lapse and because of which, some inconvenience was caused in the House. I regret for that.

HON. DEPUTY-SPEAKER: Okay. Now, Shri Kharge.

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) :** उपाध्यक्ष जी, मैंने कम्यूनल वायलेंस और इंक्रिज़िंग इंसिडेंट्स विषय पर प्रस्ताव किया था, लेकिन एजेंडा में जो आया है, जो सब्जेक्ट या विषय हमने दिया था, उसको जरा बदल कर पुरःस्थापित किया गया है। हमने विषय दिया था - 'Rising incidents of communal riots, violence and polarization which is affecting life and security of the people in various parts of the country'. लेकिन उसको अलग ढंग से आज के एजेंडा में रखा गया है। विषय कुछ भी हो, जब वह विषय एक बार एजेंडा में आया है तो मैं अपने विचारों को सदन के सामने रखता हूँ। ये इंसिडेंट्स, खास कर कम्यूनल रॉयट्स इस देश में क्यों हो रहे हैं? इनकी वजह क्या है? कौन इनके पीछे है? इनका कारण क्या है? केवल 2-3 महीने में ही इतनी संख्या में क्राइम बढ़ना, खास कर कम्यूनल इंसिडेंस ज्यादा होना, यह अच्छा लक्षण नहीं है। अगर हम स्टैटिस्टिक्स के साथ देखें तो शायद सरकार उसको मान जाएगी। सरकार का यह भी कहना है कि हमारी सरकार आने के बाद ऐसा हुआ। ...(व्यवधान) नहीं, नहीं पेपर में आया है, वैंकैय्या साहब का भी रिपोर्ट, आप पढ़ते जाओ। कम से कम आपके नेता लोग क्या बोलते हैं, वह तो पढ़िए, फिर उसके बाद में देखेंगे। यह एक सफाई भी डिफेंस में दी जा रही है। लेकिन यह सत्य है कि आज जो इंसिडेंट्स यू.पी. में हो रहे हैं, महाराष्ट्र में हो रहे हैं, गोवा में हो गए, और दूसरी जगह हो रहे हैं, इनके पीछे क्या कारण हैं? इनके पीछे कौन हैं? कौन सी शक्तियां ये काम कर रही हैं? इसके बारे में उत्तर स्पष्ट मिलना चाहिए।

इस देश की जनता को यह मालूम होना चाहिए कि धर्म के आधार पर, जाति के आधार पर, भाषा के आधार पर जो इंसीडेंट्स कराये जा रहे हैं, क्या इसके पीछे कोई साप्रदायिक शक्तियाँ हैं या सत्ता को अपने काबू में रखने के लिए ऐसे इंसीडेंट्स किये जा रहे हैं। क्या कोई इनको करवा रहा है, इसकी भी स्पष्ट जानकारी हमें मिलनी चाहिए। हम यह देखते हैं कि हमारे देश का ढाँचा सेक्युलर है और संविधान भी यही कहता है। संविधान का जो प्रियाम्बल है, उसमें भी यही लिखा गया है कि,

"WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMCRATIC REPUBLIC] and to secure to all its citizens:

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation;

So, IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION. "

तो संविधान में सेक्युलर, डेमाक्रैटिक, रिपब्लिक के लिए स्थान है। हमारा दायित्व बनता है, हमारा कर्तव्य बनता है कि कोई भी सरकार हो, चाहे सेन्ट्रल गवर्नमेंट हो, चाहे राज्य सरकार हो, उनका यह धर्म होता है कि इन तत्वों की हिफाजत करे, सुरक्षा करे। इसके बारे में इतनी केयर ले कि इसमें से किसी तत्व का उल्लंघन न हो और लोगों को दिक्कत न हो और शांति से सभी धर्मों के लोग, सभी समाज के लोग, सभी भाषा के लोग, सभी प्रान्त के लोग मिलकर रहें। इसके लिए कोशिश करना सेन्ट्रल गवर्नमेंट का बहुत बड़ा हक है या वह काम कर सकते हैं और यह उनका कर्तव्य है। लेकिन इन दो-तीन महीनों में जो 600 से अधिक इंसीडेंट्स हुए हैं।...(व्यवधान) कहां हुए है, अभी बताता हूं।...(व्यवधान) इनको कराने में किनका हाथ है?...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Let him speak.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: When your leader is speaking, you have to co-operate. Please try to co-operate. Otherwise, there will be a reaction. That is the problem.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: I will control it. It is not your duty. It is my duty. I will control it.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Sir, I am not the only one who is saying this but they also know that. Everyday they are reading in the newspapers; everyday they are hearing in the media; everyday they are getting reports; and their Intelligence is also giving them the feedback. But in spite of that, if they deny कहाँ हो गये तो मेरे पास लिस्ट है, अगर आप पूरा पढ़कर बताने के लिए बोलेंगे तो मैं एक-एक पढ़कर बता देता हूँ।

HON. DEPUTY SPEAKER: It is not necessary.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : But there have been over 600 incidents of violence against religious minorities all over Uttar Pradesh, Maharashtra and other places. In Western U.P, ...(व्यवधान) इसीलिए तो देखेंगे कि इनके पीछे किनका हाथ है?...(व्यवधान) उसके पीछे कौन है?...(व्यवधान) इन्हें कौन करवा रहे हैं?...(व्यवधान) कौन इन्स्टिगेट कर रहे हैं?...(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, आज ये घटनाएँ हो रही हैं। बहुत से लीडर्स अपने भाषण से, अपने चलन से और जहाँ कहीं भी वे जाते हैं, और बहुत से जो धार्मिक लीडर्स हैं, मैं किसी का नाम नहीं लेता क्योंकि वे इस सदन के मैम्बर नहीं हैं, लेकिन जो ..* संगठन हैं, ...(व्यवधान) इन संगठनों के नेता लोग इंस्टिगेट कर रहे हैं। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please sit down.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Kharge ji, please do not mention any particular name.

...(*Interruptions*)

**श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) :** उन्होंने केवल संगठन का नाम लिया है, किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिया। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Do no interfere.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please take your seat.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: You speak only when your turn comes.

...(*Interruptions*)

**श्री प्रहलाद सिंह पटेल (दमोह) :** इन्होंने संगठन का नाम लिया है। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: If any objectionable thing is there, it will be removed.

...(*Interruptions*)

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** महोदय, ये घटनाएँ कब घटती हैं - जब इसके पीछे कोई प्रेरणा होती है, that too a political power. अगर किसी को हिम्मत आती है कोई इंसीडैंट कराने में, एक्साइट कराने में, या जो हादसे होते हैं, इसके पीछे अगर किसी को यह महसूस होता है कि मेरे पीछे कोई पोलिटिकल पावर है, मैं कुछ भी कर सकता हूँ, वही व्यक्ति इसको कर सकता है, दूसरा कोई नहीं कर सकता, किसी की हिम्मत नहीं हो सकती। लेकिन क्या कारण है कि सिर्फ दो-तीन महीने में ही इतनी घटनाएँ हो रही हैं? अब तक क्यों नहीं हुई? आप तमिलनाडु की बात लीजिए, कर्नाटक लीजिए, केरल लीजिए या आंध्र प्रदेश लीजिए, जहाँ कहीं भी उनकी शक्ति कम है, उन जगहों पर यह नहीं हुआ। जिस जगह उनकी शक्ति ज्यादा है, उन जगहों पर ही ये घटनाएँ हो रही हैं। इसलिए हम यह कह रहे हैं कि अगर सरकार आई, आपको सत्ता मिली है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी को

सप्रैस करो, किसी को उचकाओ। ...(व्यवधान) किसी को इनसाइट करने के लिए, एक्साइट करने के लिए आपके हिन्दी में क्या बोलते हैं, मैं उसे उचकाना कह रहा हूँ। उर्दू में उचकाना भी बोलते हैं। ...(व्यवधान) आप क्यों इतना गड़बड़ कर रहे हैं। अगर हमेशा सत्य बोलते हैं तो लोगों को सहन नहीं होता। जब सत्य बोल रहे हैं तो ऐसा हो रहा है। ...(व्यवधान)

दूसरी बात यह है कि इसमें कोई शक नहीं है कि माइनॉरिटीज़ के खिलाफ बढ़ते अत्याचार और दंगों के पीछे चंद पार्टियों का हाथ है। दंगों ने इन्हें सत्ता की चाबी दी है। बिहार में सरकार से बाहर होते ही बहुत सी जगह दंगे हुए। ऐसा ही दूसरी जगह भी पोलराइजेशन करने, दूसरों को अपने साथ में लेने और दूसरों को एक करने का एक ही तरीका है कि दूसरों को आइसोलेट करो, ऐसी भावना समाज में पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं, यह गलत है, इसकी वजह से देश और समाज में फूट होगी। हम देश और समाज को जोड़ने की बात करते हैं। आप तो हमेशा समाज तोड़ने की बात करते हैं...(व्यवधान) हम जब यह कहते हैं कि सभी लोग एक हैं, सभी लोगों को मिल कर रहना चाहिए तो आप वहां जा कर तक़रीरें करके, समाज में धर्म के नाम पर या उसूल के नाम पर फूट डालने की कोशिश करते हैं। आप के लोग उस क्षेत्र में अपने उसूलों को लागू करने के लिए हर ढंग से कोशिश कर रहे हैं। खास तौर से माइनोरटीज़, वीकर सेक्शन्स या लिंग्विस्टीक माइनोरटीज़ को दबाने की कोशिश चल रही है ताकि वे लोग पोलीटिकल पावर से दूर रहें। जो लोग सत्ता में आए हैं, इस तरीके से अपने आपको सत्ता में कायम रखने की कोशश कर रहे हैं। यह देश सभी का है, किसी एक का नहीं है। कोई एक ठेकेदार नहीं है, रिलीजन के नाम पर कोई ठेका नहीं ले सकता है।

महोदय, आपको तो मालूम है, आप तमिलनाडु से आए हैं, धर्म इंसान की भलाई के लिए होता है। Religion has taken birth for the upliftment of human beings. Man is not born for religion; religions have come later on, after thousands of years. Anthropology tells this and you have been a student of anthropology. जब धर्म मनुष्य के हित और कल्याण के लिए है, तो हमें उसका पालन करना चाहिए। धर्म अलग चीज है, अधिकार अलग चीज है। इस देश को बनाने के लिए सभी की जरूरत है ताकि कोई एक ठेकेदार यह नहीं कह सकता कि हम से ही देश बनता है और हम ही सब कुछ कर सकते हैं, कोई दूसरा कुछ नहीं कर सकता है।...(व्यवधान) आपकी ठेकेदारी इसमें नहीं चलेगी। इस देश को एकता से रखने के लिए यह जरूरी है कि हम सभी को मिल कर काम करना है। जहां भी अन्याय हो रहा है, उदाहरण के लिए मैं दो-चार जगह बताना चाहता हूं, जिस-जिस जगह चुनाव हो रहे हैं या उप-चुनाव हो रहे हैं, जिन जगहों पर चुनाव आ रहे हैं, उन्हीं जगहों पर, उन्हीं राज्यों में ये दंगे ज्यादा हो रहे हैं। उप-चुनाव यूपी में हैं, इसीलिए वोट पोलराइज्ड करने के लिए वहां दो महीने में 600 से अधिक दंगे करवाए गए हैं।...(व्यवधान) अगर कुछ बोलते हैं तो कहा जाता है कि राज्य सरकार का दायित्व है और राज्य सरकार ऐसा करवा रही है। राज्य सरकार की अगर कमियां हैं तो जो करना है वे करेंगे। इसके पीछे आपके लोग जो काम कर रहे हैं, जिनमें हिम्मत आयी है, उनमें यह हिम्मत आपके पावर में आने के बाद आयी है, वे इस देश को तोड़ने का, समाज को तोड़ने का काम कर रहे हैं ये लोगों को डरा कर रखते हैं। हर एक को दबा कर रखने की यह जो आपकी नीति है, यह नीति बहुत दिनों तक नहीं चलेगी, लोग इसके लिए एक-न-एक दिन रिवोल्ट करेंगे और आपको सबक़ सिखाएंगे।

दूसरी चीज़, सिर्फ दो महीने में, केवल मई, जून में जो इंसीडेंट्स हुए हैं, ये आपके ही डाटा हैं।...(व्यवधान) आप पेपर कटिंग दिखा रहे हैं, मैं तो आपका ही डाटा निकाल कर लाया हूं। वह ही बता रहा हूं।...(व्यवधान) Government data shows that in May-June there have been 113 incidents of communal violence in the country in which 15 people have died and 318 injured.

यह राज्य सभा में अनस्टार्ड क्वैश्चन में आपका रिप्लाई है। इसे कोई प्रूफ़ की जरूरत नहीं है। यह तो गवर्नमेंट की रिप्लाई है।...(व्यवधान) यह दो महीने पहले का है।...(व्यवधान)

Of these, more than 50 per cent of the incidents have occurred in the States of Uttar Pradesh, Rajasthan, Gujarat, Madhya Pradesh, and Maharashtra, accounting for 13 out of 15 deaths. Source of this information is reply to Unstarred Question No.788 in Rajya Sabha.

इस पर तो आप विलीभ करते हैं या नहीं करते हैं, यह मालूम नहीं है, लेकिन आप पेपर कटिंग के बारे में बता रहे थे।...(व्यवधान)

This occurred in or around the 12 Constituencies that are scheduled to go for polls. Nearly 200 in two months!

Then communal clashes occurred in Bhuj on 28th July ahead of Eid, when some objectionable comments about the Prophet on Instant Messaging Service sparked off clashes between locals. That was reported not only in the newspapers but also on all other media.

Since police and public order is a State subject, if we look at State-wise the Government data of communal violence â€¦

जिस जगह यह हो रहा है, वहां की सरकार को बुलाकर या उन से बातचीत करके कि इसमें क्या कमी है, इसके पीछे कौन है, ऐसा क्यों हो रहा है, आज तक इसे एनालाइज़ नहीं किया गया। इसका मतलब यह है कि गवर्नमेंट इस चीज़ को बड़े हल्के से ले रही है। वे नहीं चाहते कि इस देश में अमन रहे और सब मिल कर रहें। आप हम पर वोट बैंक के लिए कार्य करने का आरोप लगाते हैं, लेकिन उनकी वोट बैंक के लिए यह पोलेराइज़ेशन का पॉलिटिक्स चल रहा है। जिस ज़गह पर शांति है, हर ज़गह उस शांति को भंग करने का काम उन्होंने शुरू किया है। इसलिए मैं चाहता हूं कि इसके बारे में स्पष्ट उत्तर उन से आना चाहिए। इसके बारे में गवर्नमेंट को एक्शन लेना चाहिए।

मैं, खासकर, होम मिनिस्टर से पूछना चाहता हूं। ये जो आंकड़े हैं, ये तो आपने ही राज्य सभा में दिया और दूसरे आंकड़े जिसमें 600 से अधिक इंसीडेंट्स हो गए, वे भी आपके पास हैं। ये सब आपके पास हैं।...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Many Members want to speak. Other party leaders are also there and they want to speak.

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** सर, उन्होंने पूछा कि कब-कब हुआ तो इसके बारे में बता दिया। अगर अभी के इंसीडेंट्स को देखना है तो 4 अगस्त का मेरठ का वॉयलेंस, 28 जुलाई का भुज का इंसीडेंट, 26 जुलाई का सहारनपुर का, 9 जून का गुड़गांव के इंसीडेंट्स को देखिए। दूसरे ज़गहों पर भी ऐसे इंसीडेंट्स हो रहे हैं। मेरे पास बहुत सी लिस्ट्स हैं, लेकिन मैं उनको दोहराना नहीं चाहता हूं। यह सरकार आने के बाद जो कम्युनल एलिमेंट्स हैं, उनको ऐसी ताकत मिली है कि हम कुछ भी करेंगे तो भी यह सरकार हमारे साथ रहेगी, यह उनका कहना है। इसीलिए ये वॉयलेंस एवं इंसीडेंट्स बढ़ रहे हैं और वे उसका समर्थन भी एक न एक दृष्टि से कर रहे हैं।...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: You have taken 25 minutes. The other hon. Members also want to speak. We have to conclude the discussion early because two hours are allotted for this discussion. That is why, I am saying this.

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** उपाध्यक्ष महोदय, ड्राउट पर चार दिन, एट्रोसिटी पर तीन दिन चर्चा हुई, इस पर मुझे थोड़ा बोलने का समय दीजिए। ऐसे इंस्टेंसेस बहुत हैं, मैं बताना चाहता हूं। यह सरकार हमेशा इसको टालती रही। जहां-कहीं भी इंसीडेंट्स होते हैं, उसके बारे में अगर हम यहां पर आवाज उठाते हैं तो उसको टालने की और आगे बढ़ाने की कोशिश होती है। हम कई बार स्पीकर से जाकर मिले, मिनिस्टर से भी हमने अपील की, उसके बाद आज यह मामला आया है। ...(व्यवधान) इसीलिए मैं होम मिनिस्टर से यह जानना चाहता हूं, हम यह नहीं कह रहे कि सरकार ने ख़ुद सामने खड़े होकर यह करवाया है, ऐसा तो हम नहीं बोल रहे हैं। लेकिन आपके आने के बाद ही उनमें क्यों हिम्मत

आती है और ऐसी घटनाएं क्यों घटती हैं, यह हम बोल रहे हैं। ...(व्यवधान) इसीलिए आपको इसके बारे में सोचना होगा। ...(व्यवधान) हर एक नेता आप देखिए, मैंने जब वी.एच.पी. और बजरंग दल का नाम लिया तो ये लोग बहुत गुस्से में आए। भागवत साहब ने जो बोला, वह भी आपको मालूम है। यानी हर लीडर, इनके सिम्पेथाइज़र, सपोर्टर्स और जितने भी कार्यकर्ता हैं, इस देश में अशांति फैलाने के लिए जो स्टेटमेंट देना है, वही देते हैं।

मैं आपका ज्यादा वक्त न लेते हुए एक आखिरी बात कहता हूं। वे समझ सकते हैं, इधर के लोग भी समझ सकते हैं, आप ट्रांसलेशन में क्या समझ सकते हैं, जरा देखिए। नायडू साहब को भी मैं यही बोल रहा हूं कि "मत्तल में आते हैं वे खंजर बदल-बदल के, मत्तल मतलब कतल करने की जगह, मत्तल में आते हैं वे खंजर बदल-बदल के, या रब मैं कहां से लाऊं सर बदल-बदल के।" मत्तल में इनके खंजर बदल-बदल के आते हैं, लेकिन जिनके सिर कट जाते हैं, वह सिर तो एक ही रहता है, खंजर तो अनेक रहते हैं। इसीलिए आपके पास बहुत से खंजर हैं, आप खंजर बदल-बदल के मत्तल में आते हैं, लेकिन भगवान ने हमें एक ही सिर दिया, यह सिर मत काटो, इस देश के टुकड़े मत करो, समाज के टुकड़े मत करो, समाज को, देश को एक रखो। देश और समाज अगर एक रहेगा, उसी वक्त हम सब आगे बढ़ेंगे। इस देश में अगर फूट डालने की कोशिश करेंगे, अपनी हुकूमत रखने के लिए अगर ऐसी चीजें करेंगे तो निश्चित रूप से एक न एक दिन ऐसा आएगा, हम-तुम मिल कर पछताएंगे।...(व्यवधान)

इतनी बात कह कर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

**योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर):** उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे नियम 193 के तहत एक महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं कांग्रेस के नेता माननीय खड़गे जी की बातों को यहां पर सुन रहा था। मुझे उनकी बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। वह अपना लिखित स्टेटमेंट पढ़ रहे थे तो कह रहे थे कि 113 घटनायें घटित हुयीं, लेकिन जब वे मौखिक बोल रहे थे तो कह रहे थे कि 600 से अधिक घटनायें घटित हुयीं। इसमें सत्य क्या है? मुझे लगता है कि यह पूरा देश जानता है।

26 मई को श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी नेतृत्व की सरकार ने शपथ ग्रहण किया था। इस देश के अंदर इस सरकार के आने के बाद आम जनता में विश्वास बहाली हुयी है। यह शासन और प्रशासन में देखा जा सकता है। खड़गे जी जो आंकड़े यहां पर कह रहे थे, मैं उसके पीछे के आंकड़े आपको बताता हूं। मुझे लगता है कि अगर ये आंकड़े वास्तव में स्वीकार करेंगे और सचमुच इस देश की साप्रदायिक हिंसा से चिंतित हैं तो साप्रदायिक आधार पर इन्होंने जो घोषणायें की हैं तो इनको पूरे देश से माफी मांगनी पड़ेगी।

महोदय, जिन प्रदेशों की घटनाओं का मैं जिक्र कर रहा हूं, वर्ष 2011 में न वहां पर और न ही केंद्र में ही भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। इस देश में 580 घटनायें घटित हुयीं। इनमें 91 लोग मारे गए और 1899 घायल हुए। इनमें सबसे अधिक उत्तर प्रदेश के अंदर 84 घटनायें घटित हुयीं, 12 लोग मारे गए और 347 लोग वर्ष 2011 में घायल हुए थे। ...(व्यवधान) खड़गे जी, आपने कहा है, आप सुन तो लें।...(व्यवधान) आप सुन लीजिए।...(व्यवधान)

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** मैं हमेशा सदन में बैठता हूं। ...(व्यवधान) मैं आपके जैसा नहीं करूंगा। ...(व्यवधान)

**योगी आदित्यनाथ :** महोदय, दूसरे नम्बर पर महाराष्ट्र है। ...(व्यवधान) वहां 88 घटनाएं घटित हुईं। ...(व्यवधान) वहां कांग्रेस नेतृत्व की सरकार है। ...(व्यवधान) वहां 88 घटनाएं घटित हुईं, जिनमें 15 लोग मारे गये। तीसरे स्थान पर कर्नाटक है, यहाँ पर भी कांग्रेस की सरकार है, वहां 70 घटनाएं घटित हुईं। केरल में 30 घटनाएं घटित हुईं। ...(व्यवधान) मैं वर्ष 2011 की बात कर रहा हूँ। वर्ष 2012 में 668 घटनाएं घटित हुईं, जिनमें 94 लोगों की मौतें हुईं और 2,117 घायल हुए। वर्ष 2013 में केन्द्र में कांग्रेस नेतृत्व की सरकार थी, तब 823 से अधिक साप्रदायिक हिंसा की घटनाएं पूरे देश के अन्दर घटित हुईं।

यद्यपि कानून व्यवस्था राज्य का विषय है और राज्य सरकार की जैसी मंशा होती है, वहाँ का राजनीतिक नेतृत्व जैसा होता है, वहाँ का प्रशासन उसी प्रकार की कार्रवाई करता है। मुझे लगता है कि ईमानदारी से इन लोगों ने विश्लेषण किया होता और अपनी केन्द्र सरकार या अपने से जुड़े हुए अपने सहयोगी दलों के द्वारा जो संचालित सरकारें हैं, उन सरकारों के साप्रदायिक एजेंडे पर ध्यान दिया होता कि आखिर यह पोलराइजेशन क्यों हो रहा है, पोलराइजेशन के कारण क्या हैं? पोलराइजेशन के पीछे के कारणों को ईमानदारी से विश्लेषण करिए, क्योंकि एक तरफ आप कहते हैं कि हम सेक्युलर हैं और दूसरी तरफ जो एजेंडा लागू करते हैं, उसको साप्रदायिक रूप से कम्युनल आधार पर लागू करते हैं। इस देश में 12 लाख से अधिक साधु-सन्त और पुजारी रहते हैं। ये लोग इमामों के लिए वेतन की घोषणा करते हैं, एकपक्षीय कार्रवाई करते हैं, क्या यही सेक्युलर एजेंडा है? इसे दिल्ली की सरकार ने किया, पश्चिम बंगाल की सरकार ने किया, महाराष्ट्र की सरकार ने किया, क्या यही सेक्युलर एजेंडा है? ये लोग समाज को साप्रदायिक आधार पर बांटते हैं।

महोदय, मैं उत्तर प्रदेश की बात करता हूं। वहाँ पर जो योजनाएं हैं, उनमें 20 प्रतिशत मुस्लिम आबादी के लिए आरक्षित कर दिया गया। कब्रिस्तान की बाउंड्री वाल के नाम पर गांव-गांव में विवाद खड़ा कर के 300 करोड़ रुपए उसके लिए आवंटित किए जाते हैं और गांव-गांव में उसके माध्यम से विवाद खड़ा किया जाता है। सुप्रीम कोर्ट कहता है कि किसी भी सार्वजनिक संपत्ति पर, मंदिर के नाम पर, मस्जिद के नाम पर, किसी भी अन्य उपासना विधि के नाम पर, मदरसों के नाम पर और मजारों के नाम पर कब्जा मत करने दो। लेकिन, उत्तर प्रदेश में कब्रिस्तान की बाउंड्री वाल के नाम पर धड़ल्ले से काम चल रहा है। उस पर कोई रोक-टोक नहीं है, क्योंकि शासन की यह मंशा है इसलिए प्रशासन उसमें बोलता नहीं है, क्या सांप्रदायिक ध्रुवीकरण नहीं होगा? उसी प्रकार से उससे भी खतरनाक स्थिति आतंकवादियों पर दायर मुकदमें वापस लिए जाते हैं। ...(व्यवधान) इस देश में जो लोग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बने हुए हैं, ...(व्यवधान) जिन लोगों ने राष्ट्र की संप्रभुता को चुनौती दी है,...(व्यवधान) जो लोग भारत की संप्रभुता को लगातार चुनौती दे रहे हैं,...(व्यवधान) और देश में हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं, ...(व्यवधान) उन लोगों पर दायर मुकदमें,...(व्यवधान) चाहे वह राम जन्म भूमि पर आतंकी हमले का मामला हो...(व्यवधान) या संकटमोचन मंदिर काशी में सी.आर.पी.एफ. रामपुर का मामला हो,...(व्यवधान) या गोरखरपुर का सिरियल ब्लास्ट का मामला हो,...(व्यवधान) ये जितने भी मामले हैं...(व्यवधान) इन सभी मामलों में जिन आतंकवादियों के खिलाफ मुकदमें दर्ज हुए थे, उत्तर प्रदेश की सरकार ने वोट बैंक के लिए उन मुकदमों को वापस लेने का कुत्सित प्रयास किया है। अगर न्यायालय बीच में नहीं होता तो संभवतः आतंकवादी बाहर छूटकर नरसंहार कर रहे होते, जिस प्रकार से उत्तर प्रदेश के अंदर हुआ है...(व्यवधान) और पूरे देश के अंदर हुआ है। ...(व्यवधान) उसके बाद भी ये कहते हैं कि सांप्रदायिक सौहार्द बना रहे?...(व्यवधान)

महोदय, चर्चा का विषय होना चाहिए कि आखिर सांप्रदायिक कौन है? ...(व्यवधान) कौन है सांप्रदायिक? ...(व्यवधान) मुझे लगता है कि इस पर चर्चा होना बहुत आवश्यक है। महोदय, हम लोगों ने जो जाना है, हम लोगों ने जो समझा है कि सांप्रदायिक वह होता है, जो कहता है कि मेरा ईष्ट, मेरा देव या मेरा पैगम्बर ही सर्वश्रेष्ठ है, उसके मानने वालों को तो जीवित रहने का अधिकार है, शेष को जीवित रहने का अधिकार नहीं है। मुझे लगता है कि वह सांप्रदायिक है। हिन्दू जीवन दर्शन कभी इस बात की इजाजत नहीं देता है। हमने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का संदेश दिया था। हमने "सर्वे भवन्तु सुखिनः' का संदेश दिया था।...(व्यवधान) हमने तो इस देश के अंदर एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की बात कही है। हमारा दर्शन जीओ और जीनो दो में विश्वास करता है। दुनिया की कौन-सा ऐसा मजहब और कौम है जिसको विपरीत परिस्थितियों में इस हिन्दू दर्शन ने अपने यहां शरण न दी हो, उसको फलने-फूलने का अवसर न दिया हो। दुनिया के अंदर ऐसा कौन सा कौम है? लेकिन जिस हिन्दू दर्शन ने सबको शरण दी, सबको

फलने-फूलने का भरपूर अवसर दिया, आज जब उसी के खिलाफ षडयंत्र होना प्रारंभ होता है तो उसे एकजुट होना तो पड़ेगा ही और मुझे लगता है कि इन लोगों के कर्मों का फल है कि पूरे देश का हिन्दू जनमानस आज इस बात के लिए तैयार हो रहा है कि आज उसके खिलाफ शासन तंत्र से जो षडयंत्र हो रहे हैं, उसका जवाब अपने स्तर पर देना ही पड़ेगा। आज वही स्थिति सामने आई है।

महोदय, मैं पूछना चाहता हूं।...(व्यवधान) मैं इन लोगों से पूछना चाहता हूं। ...(व्यवधान) जब भारत के मुसलमान हज यात्रा पर जाते हैं...(व्यवधान) तब उनकी पहचान भारतीय के नाम पर नहीं...(व्यवधान) पाकिस्तानी के नाम पर नहीं ...(व्यवधान) बंगलादेशी के नाम पर नहीं ...(व्यवधान) भारतीय उपमहाद्वीप के जो भी मुसलमान हज यात्रा के लिए जाते हैं...(व्यवधान) उनकी पहचान हिन्दूस्तानी के नाम पर होती है। ...(व्यवधान) उनकी पहचान भारतीय, पाकिस्तानी या बांगलादेश के नाम पर नहीं ...(व्यवधान) लेकिन अगर हम यहां हिन्दू पहचान उनके ऊपर लागू करने का प्रयास करते हैं...(व्यवधान) तो इनको बुरा लगता है।...(व्यवधान) हिन्दू सांप्रदायिकता नहीं...(व्यवधान) हिन्दू राष्ट्रीयता का प्रतीक है। ...(व्यवधान) भारत की राष्ट्रीयता के प्रतीक इस हिन्दुत्व को वे बदनाम करेंगे...(व्यवधान) तो उसकी कीमत इन लोगों को चुकानी पड़ेगी।

महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बार कहना चाहता हूं...(व्यवधान) गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि अगर भारत को समझना है...(व्यवधान) उन्होंने कहा था अगर भारत को समझना है तो भारतीय अस्मिता को पहचानना पड़ेगा। भारतीय अस्मिता को पहचानना है तो स्वामी विवेकानन्द के बारे में आप जान लीजिए। स्वामी विवेकानन्द ने एक बात कही थी - गर्व से कहो हम हिन्दू हैं। स्वामी विवेकानन्द साप्रदायिक नहीं थे, स्वामी विवेकानन्द किसी पार्टी के नहीं थे, स्वामी विवेकानन्द ने पूरी दुनिया के अंदर भारत का प्रतिनिधित्व किया था।...(व्यवधान) पूरी दुनिया के अंदर हिन्दू अपनी सहिष्णुता के लिए पहचाना जाता था। आज उस हिन्दू के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जा रहा है। वह कश्मीर से विस्थापित होता है। उसे कश्मीर से निकाला जाता है।...(व्यवधान) उस बारे में इस सदन में एक बार भी चर्चा नहीं होती। तब इन लोगों का मुंह नहीं खुलता जब कश्मीर से साढ़े तीन लाख की संख्या में कश्मीरी पंडित निकाले जाते हैं।...(व्यवधान) तब ये लोग नहीं बोलते।...(व्यवधान) वर्ष 2012 में असम के अंदर तीन महीनों तक बोडो जनजाति के लोगों को मारा जाता रहा। कोई नहीं बोला।...(व्यवधान) जम्मू कश्मीर के हिन्दुओं के मारने पर कश्मीरी पंडितों को उनके घरों से बेदखल कर दिया गया। ये लोग एक बार भी नहीं बोले, इन्हें पीड़ा नहीं हुई।...(व्यवधान) यह दुनिया के अंदर अपने आप में विरला उदाहरण था जहां अपने ही देश में अपने ही जानने वाले लोग विस्थापित होकर खानाबदोश की जिंदगी जी रहे हैं। उस शर्मनाक घटना की निन्दा एक बार भी इन लोगों ने नहीं की। ...(व्यवधान) मुम्बई के दंगों पर ये लोग मौन रहे। जमशेदपुर और भागलपुर के दंगे कांग्रेस के समय में हुए थे। इन लोगों ने उस पर एक बार भी चिन्ता व्यक्त नहीं की। और तो और, जिन सिख गुरुओं का योगदान इस देश को बचाने, इस देश की धर्म और संस्कृति और समाज को बचाने में बहुत महत्वपूर्ण था, वर्ष 1984 में उन सिखों के कत्लेआम पर भी इन्हें शर्म महसूस नहीं होती।...(व्यवधान) यहां ये लोग इस देश के अंदर साप्रदायिक सौहार्द की बात करते हैं। इनका पूरा चेहरा साप्रदायिक हिंसा से रंगा हुआ है, साप्रदायिक एजेंडे से रंगा हुआ है।...(व्यवधान) असम में क्या हो रहा है? बंगलादेशी घुसपैठिए इन लोगों के अपने हो गए।...(व्यवधान) इस देश में लाखों वर्षों से रहने वाला समुदाय पराया हो गया।...(व्यवधान) असम में बंगलादेशी घुसपैठियों के कारण कोकराझार...(व्यवधान)

SHRI ASADUDDIN OWAISI (HYDERABAD): Hon. Deputy-Speaker, Sir, I am on a point of order. My point of order is under rule 376. While making his speech the hon. Member has mentioned about communal riots. In respect of 2011 he has given some figures which are wrong. He has completely forgotten 10-02-2013. He cannot give wrong figures. Gujarat had the highest number followed by Madhya Pradesh. I want to put the records straight...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Please take your seat. You are disputing the figures mentioned by the hon. Member in his speech. You can mention that in your speech. There is no rule on this. You can counter the argument during your speech. When your time to speak comes, you can dispute the figures.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri Yogi Adityanath, you may continue.

**योगी आदित्यनाथ :** उपाध्यक्ष महोदय, सच्चाई कड़वी होती है और कड़वी सच्चाई ये लोग स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि ये लोग उस बीमारी से स्वयं त्रस्त हो चुके हैं जो बीमारी इन्होंने पूरे देश को दी है। इसीलिए ये लोग उस सच्चाई को स्वीकार नहीं कर सकते। कश्मीरी पंडितों के निष्कासन और कश्मीर पर हुए अत्याचार पर ये लोग मौन थे।...(व्यवधान) मैं वर्ष 2011-12 में असम में देख रहा था। तीन महीनों तक लगातार दंगे होते रहे। इन्होंने सदन में एक बार भी चर्चा नहीं करवाई। असम जलता रहा। इसके साथ-साथ एक बार कांग्रेस के लोगों ने असम के ही मुख्य मंत्री को कठघरे में खड़ा कर दिया कि उन्होंने बोडो लोगों के बारे में कैसे बोल दिया। अरे, बोडो वहां का नागरिक है। उसके बारे में नहीं बोलेंगे, तो किसके बारे में बोलेंगे? लेकिन ये लोग बंगलादेशियों, घुसपैठियों की वकालत करते हैं...(व्यवधान) बंगलादेशी घुसपैठियों की वकालत करते हुए इन लोगों ने पूरे पूर्वोत्तर भारत का समीकरण बदला है। ...(व्यवधान) असम में आज कोकराझार, धुबरी, चिराग और बरपेटा जिले, जो हिंसा की सर्वाधिक चपेट में हैं, वे इसलिए हैं क्योंकि बंगलादेशी घुसपैठियों ने वहां आकर जमीनों पर कब्जा कर लिया है। इन लोगों ने वर्क परमिट के साथ-साथ उनके राशन कार्ड बनाये हैं और इन्होंने ...(व्यवधान) *इन्होंने देश के साथ खिलवाड़ उनके माध्यम से करवाया है। ...(व्यवधान)

महोदय, हम किसी और बात में नहीं जाना चाहते। मैं कांग्रेस और कम्युनिस्टों से कहना चाहता हूं कि कोयम्बटूर और बेंगलुरू धमाके का जो अभियुक्त है, उस दुर्दांत आतंकवादी के लिए विधान सभा का स्पेशल सत्र बुलाया जाता है। दोनों दल एक साथ अपील करते हैं कि उसे छुड़वाओ। ...(व्यवधान) क्या यही सेक्युलर है? क्या इनका यही सेक्युलर एजेंडा है? क्या इस देश में यही सेक्युलरिज्म है? ...(व्यवधान) इस देश में क्या हुआ था? ...(व्यवधान) इस देश में जो हुआ था, उसे हम भूले नहीं हैं। ...(व्यवधान) 11 अगस्त, 2012 को मुम्बई के आजाद मैदान में जो कुछ हुआ ...(व्यवधान) आजाद मैदान की घटना क्या थी? आजाद मैदान में रोहिंगया मुस्लिम जो बर्मा में रहते हैं, उनके और वहां के बौद्धों के बीच में हिंसा हुई, दंगे हुए। यह मामला भारत का न होकर म्यंमार का है, लेकिन म्यंमार की घटना में दंगा कहां होता है--आजाद मैदान मुम्बई में। ये लोग मौन रहते हैं। वहां शहीद स्मारक तोड़ा जाता है, पुलिस के जवानों को मारा जाता है ...(व्यवधान) मीडिया कर्मियों को मारा जाता है। उनके साथ-साथ पुणे में दंगे हुए। ...(व्यवधान) उनके साथ उत्तर प्रदेश में बरेली, लखनऊ, कानपुर और इलाहाबाद में दंगे हुए। ये लोग मौन रहे। इन लोगों मे कभी उस पर आवाज नहीं लगायी। ये लोग उस घटना पर मौन रहे। ये वही लोग हैं, जो आजाद मैदान की घटना पर मौन थे और बाबा रामदेव और उन सत्याग्रहियों पर ये लोग रामलीला मैदान में लाठीचार्ज करते हैं। ...(व्यवधान)* बेशर्मी के साथ वंदे मातरम् का गान करने वाले देश भक्तों पर लाठी चार्ज करते हैं। ये लोग देश के अंदर सांप्रदायिक हिंसा की बात करते हैं। सांप्रदायिक हिंसा किसने फैलायी है? कौन इस देश में फैला रहा है? कौन इस देश में सच्चर कमेटी के नाम पर समाज को बांटने का कार्य कर रहा है? ... ** ..(व्यवधान)

महोदय, उत्तर प्रदेश की जो घटनाएं आयी हैं, उन घटनाओं पर अगर आप नजर डालेंगे ...(व्यवधान) जो घटनाएं हुई हैं, उन घटनाओं को अगर मैं आपके सामने रखूं, तो घटनाएं

अपने आप में चौंकाने वाली घटनाएं हैं। ये चौंकाने वाली घटनाएं कितनी खतरनाक हैं ...(व्यवधान)

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Sir, I am on a point of order under Rule 380. The hon. Member has made a defamatory statement. Rule 380 says:

> "If the Speaker is of the opinion that words have been used in debate which are defamatory or indecent or unparliamentary or undignified, he may, in discretion, order that such words be expunged from the proceedings of the House."

...(*Interruptions*)

The Member has used such words. We have already raised the issue of communal violence. We are not against anybody. We want secularism to be maintained in the country. Therefore, we wanted a discussion on the matter. But the hon. Member while speaking used the name of Pakistan. He abused us while naming Pakistan. This is unparliamentary, Sir. This should be deleted. ...(*Interruptions*)

SHRI P. KARUNAKARAN (KASARGOD): He has been using words like Hindus and Muslims. This is against the secular fabric of the country. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: The Member has raised certain objections. I will go through the record and if there is anything objectionable in it, I will expunge it. Yogi Adityanath may continue now.

**योगी आदित्यनाथ :** उपाध्यक्ष महोदय, साप्रदायिक एजेंडा इन लोगों का है, हमारा नहीं। हम लोगों ने पूरे देश को एकजुट करने का वायदा किया था।...(व्यवधान) हम लोगों ने तो नारा भी दिया था- "सबका साथ और सबका विकास। " लेकिन असम में "अली और कुली " का नारा इन लोगों ने दिया था।...(व्यवधान) असम को ये लोग बांटने का प्रयास कर रहे हैं, इसे देश से अलग करने की साज़िश कर रहे हैं। ...(व्यवधान) इसीलिए मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ, क्या यही सेकुलरिज्म है? ...(व्यवधान)

महोदय, मैं उत्तर प्रदेश के बारे में चर्चा करना चाहता हूँ।...(व्यवधान) उत्तर प्रदेश में वर्ष 2012 में 118 घटनाएँ घटित हुई, वर्ष 2013 में 247 और मार्च से मई तक 65 घटनाएँ घटित हो चुकी हैं। सहारनपुर का दंगा इसलिए हो जाता है, क्योंकि हाई कोर्ट के आदेश पर सहारनपुर में एक गुरुद्वारा का निर्माण हो रहा था। न्यायालय के आदेश को शासन नहीं मानेगा, उत्तर प्रदेश सरकार नहीं मानेगी। कांठ में इसलिए विवाद होता है क्योंकि उस गांव में चार धर्मस्थल हैं- तीन मस्ज़िद और एक मंदिर। मंदिर हिन्दू समुदाय का है। तीन मस्ज़िदों पर माईक रहेगा, लेकिन मंदिर से माईक उतार दिया जाता है। क्या यही इन लोगों का सेकुलर एजेंडा है? क्या यही सेकुलरिज्म है? क्या इसे ही आप सेकुलरिज्म कहेंगे?

महोदय, मेरठ में एक घटना घटित हुई। मेरठ में एक बालिका का अपहरण होता है और इसके बाद उसके साथ जो घटना घटित होती है, वह कितनी शर्मनाक थी?...(व्यवधान) महिला हिंसा पर हम चर्चा कर रहे हैं। उस महिला पर हुए हिंसा की हम बात कर रहे हैं, उसके बावजूद ये लोग मौन हो जाते हैं।...(व्यवधान) उस मामले में इन लोगों की जुबान नहीं खुलती। ...(व्यवधान) न्याय का तराज़ू तभी चलेगा, जब इस देश के अंदर सबके लिए कानून समान रूप से लागू होगा। ...(व्यवधान) इस देश में कानून मात्र सप्रदाय और मज़हब के आधार पर लागू नहीं हो सक्ता। ...(व्यवधान) इसीलिए मैं आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी से अनुरोध करूँगा, ...(व्यवधान) कांग्रेस ने मौका दिया है, अच्छा होगा कि पूरे देश के अंदर और उत्तर प्रदेश में ये जो घटनाएँ घटित हुई हैं, ...(व्यवधान) उनकी एसआईटी द्वारा जांच करवा दी जाए। सुप्रीम कोर्ट के किसी सीटिंग जज़ से इन साप्रदायिक दंगों की जाँच करवाने के साथ-साथ, अराष्ट्रीय तत्त्वों से किनके सम्बन्ध हैं, इसकी भी जाँच करवा दी जाए, तो दूध का दूध और पानी का पानी सबके सामने आ जाएगा। ...(व्यवधान) यही मांग करते हुए, मैं अनुरोध करना चाहूंगा कि ये लोग साप्रदायिक एजेंडे के साथ देश के सामने आए हैं, ...(व्यवधान) देश के खिलाफ इनके खतरनाक मंसूबों के खिलाफ हम सबको लड़ना पड़ेगा।

SHRI J.J.T. NATTERJEE (THOOTHUKUDI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, under the able leadership of *Puratchi Thalaivi* Amma, Tamil Nadu has the unique distinction of maintaining excellent communal harmony in the State, although some communal elements in certain parts of the State are in the habit of creating communal rift. *Puratchi Thalaivi* Amma has taken every step to prevent communal tension in the State. The steps taken by the State include preventive and punitive steps. Laws are enforced without any prejudice. As a result, all the religious and caste groups are unanimous in lauding the efforts of the hon. Chief Minister, *Puratchi Thalaivi* Amma.

The police force in the State observes total neutrality vis-Ã -vis communal forces in the State. Laws are enforced in an objective manner without any fear or favour. On the directions of the hon. Chief Minister of Tamil Nadu, the police forces in the State have waged an all-out war against the communal forces.

I represent Tuticorin, the pearl city, located in the southern most part of peninsular India, which is known for its all-weather major port and a number of industries. There is an urgent necessity to upgrade the infrastructure in and around Tuticorin, such as laying of double line and electrification of the traction in the region, introducing a super fast train that connects Tuticorin with Chennai, with limited stops at Madurai and Tiruchi, introduction of high speed trains and connectivity to Coimbatore, Kochi and Bengaluru by the Railways, development of Tuticorin Port into a major container transhipment hub and adding a ship building segment, and building six lane highways from Tuticorin to Madurai and Tirunelveli.

Under the guidance of our beloved leader, Amma, the Home Department maintains law and order in the State in an exemplary manner. All concerned have been sensitised about the ill effects of communalism and the necessity to thwart the designs of anti-social and anti-national elements in disturbing the communal harmony.

At the same time, our hon. Chief Minister of Tamil Nadu is very much against the efforts of the Central Government in introducing the Communal Violence (Access to Justice and Reparations) Bill, 2013. This legislation, which seeks to give overriding powers to the Centre to the total exclusion of the States in handling instances of communal and targeted violence, vitiates the norms for Centre-State relations envisaged by the Justice Sarkaria Commission. It is a blatant attempt to totally bypass the State Governments and concentrate all powers in the Central Government, rendering the States absolutely powerless and totally at the mercy of the Centre. It particularly gave the impression that it was only the Centre which was greatly concerned about organised communal and targeted violence while the State Governments abetted such crimes. Such an approach

is totally biased.

We are against introduction of such a Bill. The Centre should give up such efforts and join hands with the State Governments in fighting the menace of communal violence.

Hon. Deputy-Speaker, Sir, I thank you for giving me an opportunity to speak on this occasion.

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (KOLKATA UTTAR): Hon. Deputy-Speaker, Sir, at the very outset, I would like to say that we are discussing today the need to evolve an effective mechanism to deal with the incidents of communal violence in the country.

Sir, it is not the point of the debate that we will fight with each other. The purpose is to evolve some mechanism. Shri Kharge initiated the discussion and Yogi Adityanath responded to it up to a certain extent. We should all come to the sense that we are the firm believers of the principles of secularism, communal harmony and the integrity of the country. We also feel that the main ethos of India reflects unity in diversity. We sing the song:

*"NANA BHASA, NANA MOT*

*NANA PORIDHAN*

*BIBIDHER MAJHE DEKHO MILONO MOHAN"*

It means that we speak many languages, we wear many dresses, we have many opinions but still we are the firm believers of the opinion that unity in diversity should be there.

In the *National Anthem,* we sing: "पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग, विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग।" So, this is the spirit. We, the Indians, owe our allegiance to parliamentary democratic system where every religion, every person has his right to speak his own opinion, his own thought, his own philosophy. But the discussion, as it appears today, shows that they are speaking for the Hindus sitting there and here we are for the Muslims. But the picture is not that. In this whole House, we are for all types of believers of caste, creed and religion. We stand for the betterment of this great country. This is a country where *Iqbal* sang: "सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।" So, that is why, we should try unitedly to see that this love and sense of security amongst our countrymen prevail very much. Somebody may be minority here, they may be in a majority in some other place. If we consider the whole world, the Christians and the Muslims are in a majority in a larger scale. In some places in our country, there are minorities which, not only mean the Muslims but also the Sikhs, the Budhists, the Jains, the Parsis, the Christians who are all there. They all belong to a totally minority section. It is the Government which is running the country.

**17.00 hrs.**

Primary responsibility lies on their shoulders to ensure that communal violence do not take place in the country. I hope Rajnath Singh *ji* is a very responsible person, and he should, as the Home Minister of the country, always try to give assurances that communal violence will not be allowed to take place anywhere. Provocations certainly create communal tensions.

` Bengal is actually known as a very secular State but what we are finding now a days is that some tensions are being created in some corners of the State. I would also request the hon. Home Minister to find out the States which are basically known as totally tension-free States from communal struggle and communal violence, and also to find out why such type of tensions are taking place at some level. These are to be stopped at the very initial stage itself.

Only communal violence creates bad feelings, brutality, losses of properties. These are the things, about which everybody is of the opinion that they are to be registered. Adityanath *ji* was saying that some Imams are getting some benefits. He can make a claim that those priests should also get some wages. That can be done. Why are they getting it? That should not be the target of discussion by which a sense of insecurity will prevail. Therefore, they can claim that they should also be given some assistance or some financial support. This is our demand. They may say that that would give a good sense, and I think, that would be the correct line. ...(*Interruptions*) The ruling party, which has such a huge number of MPs, should have some patience, listen to us and reply when their turn comes. That would lead to a good discussion.

If we are united, no one can take away peace of our country. Communal tensions and communal violence have shown us how dangerous effects can spread either in a State or it may go out of that State and spread throughout the country. We should be totally cautious from the very beginning.

What I want to request and say to Rajnath *ji* is that the Government of India must remain alert, cautious and vigilant to prevent communal tensions, communal violence; otherwise, safety and security of the common people will totally be under threat. The secular fabric of this great country will be challenged. I hope, no political party is asking for such a situation. I was telling whoever was in power that they should have the major responsibility to look into it.

Yesterday, I was listening to the speech of UPA Chairperson, Shrimati Sonia Gandhi at Thiruvananthapuram. She was giving the data that so many incidents have taken place and so many communal violence have taken place. I would request Rajnath *ji* to take this allegation against the present Government seriously. If the number goes above 400, 500 or 600, then why not the Government take the responsibility and assure the House that they would investigate all the allegations which have been made here?

Adityanath *ji* was telling that the Supreme Court Judge be authorized to look into it. ...(*Interruptions*) Nobody should oppose this. If the main Opposition Party is in favour – the Supreme Court Judge can investigate – and if the Government is agreeableâ€¦ ...(*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : It is the feeling of even Kumari Mamata Banerjee. I would like to just bring it to your notice.

**17.05 hrs** (Shri Ramen Deka *in the Chair*)

According to Express News Service of August 13, 2014, the Chief Minister of West Bengal Kumari Mamata Banerjee said ...(*Interruptions*) He has yielded. I requested him, he has yielded. What is your problem? ...(*Interruptions*) Without taking the name of any political party, she said that some parties are trying to create a divide between Hindus and Muslims and urged the people not to fall into the communal trap. She said that she has information that attempts are being made to create communal tension in the State. She also asked people not to indulge in communal violence. I do not want to say anything more because this is not only the feeling of Sonia Gandhiji, but this is the feeling of Mamataji and Mulayam Singhji.

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY : Sir, in our Constitution, we have the right to equality amongst all castes and religion. We are the law makers of this country. So, we should take all efforts to see that our country remains totally united and all sections of people belonging to different caste, creed and religion live in peace and harmony and with love for each other.

When Pandit Jawaharlal Nehru was the Prime Minister, we spoke about international brotherhood and international solidarity. That is the ethos of our Indian culture which we spread throughout the world. When we are believers in international brotherhood and international solidarity, why should we lack that spirit here within our country? When Dussehra festival comes, Hindus and Muslims embrace each other by saying 'Happy Dussehra', when Christmas comes, we embrace Christians and say, 'Merry Christmas' and when Eid festival comes, Hindus and Muslims embrace each other and say, 'Eid Mubarak'. So, this is the culture of our country. We should try to protect it. We are believers of the slogan ' *Mera Bharat Mahaan*'.

Sir, I would not like to allow the discussion to go in such a manner that the spirit of this discussion is diverted in some other way by which instead of trying to find out a solution we make it more complicated and worsen the situation which is existing now. We have another speaker from our party. He will also speak later. So, I conclude with an appeal that we, as law markers of the country, should try to evolve such a mechanism by which we can say that India is not having any communal violence in the coming days.

SHRI TATHAGATA SATPATHY (DHENKANAL): Mr. Chairman, Sir, I thank you for giving me the opportunity to speak in this debate.

Sir, it has been said that religion is the opium of the masses and anybody talking about religion, discussing about religion or indulging in religious activity, you can very well understand that it is a mind of an opiate, it is the mind of a mob or individuals or groups who are not sensible, who are not civilized. I feel this is a sad time for our country. I am seeing how both sides are squabbling and fighting. I have seen two Lok Sabhas where those who are screaming at the top of their voices and those who claim to be the saviours of the minorities, the way they behave, the way they took care of this country and the sadness that they brought about on this pious land, the resultant, the factual situation is in front of the whole nation to see who is where.

There can be laughter; there can be mirth but we are discussing something which involves the lives, the very existence of small children, of women, of mothers, of innocent men, of people who are not involved in our demagogy, who are not involved in the madness that we all wish to propagate. I am insisting on 'all'. None of us can say that I am exempt from this madness.

I come from the land of Odisha where our ancestors called it 'The land of Jagannatha', the land where the creator of the Universe resides. A Muslim, a Hindu, a Christian, all that we can think of, everybody resides within the Universe and the creator takes everybody as his or her or its creation or child. In that very land, in 600 AD, we had a writer Deena Krishna Das who wrote the *Lakshmi Purana*. The concept of Lakshmi is *chanchala*. She is not subservient or she is not bound to be in a static situation, in the houses of people in Mumbai or in certain cities, those who own big industries or are big moneyed people. *Chanchala* naturally is desirous of being around with everybody. This concept, Deena Krishna Das brought in so many hundreds of years ago to project that Lakshmi will go to the house of the downtrodden. He took idols of Lakshmi to the homes of the untouchables thereby implying that God is not someone's prerogative, is not someone's private domain; God is for everybody.

Sir, obviously we should not mix up *dharma*, as we take it now like religion, with godliness or divinity. These are diverse thought processes. Somebody who is *dharmik* need not necessarily be divine. And somebody who is divine need not also be necessarily *dharmik*. Luckily, we do not have people here who have come from say Jerusalem or Medina or Mecca. If we go to a scientific level and if we check our DNA, all of us will have the same DNA, all of us will have the same roots. But, yet we fight; yet we create bitterness and we try to belittle each other as much as we can.

It is interesting to note that – whatever religion we are in – when Chanda Ashoka from Pataliputra invaded Kalinga, he became Dharma Ashoka. For the first time ever, Buddhism became the State religion. It is because of the war in Kalinga, Buddhism spread to Sri Lanka and Buddhism spread to the Far East. That is how today you have Buddhism as an international religion. So the State always impresses upon the weak, upon the downtrodden, upon the poor that you convert to the religion of the king. Whoever rules becomes the saviour. That is evident. But that does not imply that Hindustan means everybody is Hindu. In Hindustan, like I had said once earlier, the word 'Hind' came from the river Sindh. So, people living on the banks of the Sindhu River became Hindus. I do not live along the banks of Sindhu River. Maybe some Pakistani lives there. I live in Odisha. I am a Hindu and I am also a Brahmin but I do not think that my religion makes me greater or different or superior to anybody else in this House or in this world. I am not inferior to anybody either. I am what I am.

Sir, we have had a National Integration Council, which meticulously, assiduously UPA-I and UPA-II made it into a joke and destroyed the very fibre of that organisation.

The National Advisory Council became a super Cabinet and started taking all kinds of political, economic and social decisions. That was one bizarre thought process. We have another bizarre thought process where the Chief Executive of our country says, 'why has a proxy war, let us have a war?' Sir, Hindi is neither your language nor mine but someone who knows Hindi told me that its meaning is *lalkar rahe hain.* Sir, can you image, in

the present time, in the 21st Century, someone can appeal that let us have an open war? Is India capable of that?

I sometimes wonder about microphones. Today, some report said that 120 communal violence incidents have erupted because of microphones. Sir, we are all aware that most parts of India today do not have electricity. So, how do microphones work? When I was studying in Puducherry, I had a huge Hindu temple right outside my boarding. It used to blare at 3:30 in the morning. It used to blare devotional songs into my room. That is like the beginning of the evening for me, that is when I go to bed. So I could not even sleep. I started wondering, when did microphones come to India? Known history says and you can verify that electrically operated amplification, sound amplification system was first introduced in India in 1921 by the British to quell mobs. Before that neither any temple nor any mosque nor any gurudwara or church, nobody had an amplification system. So, what did they do? How did they pray? Was God not existing at that time? What were we doing at that time? We were probably listening to God.

Sir, I know that you have curtailed my time and you do not wish me to continue. I have been listening to very learned seniors like Yogiji, I respect him and I always do a very heartfelt *pranaam* to him. Khargeji is a great leader of this country. I heard *dada* also. But I have not heard any concrete proposals.

This country has experimented and has seen one or two institutions that it has set in place and which are successes internationally. The Election Commission of India is one such success. We have seen and nobody in this House can say that his voting was wrong and the Election Commission did something *mala fide*. All of us will raise our hands to say that the Election Commission of India has proven over and over again that it is an impartial, honest, capable and efficient organisation operating in India. When the need arises, it summons CISF, CRPF, BSF and even the Army and local police to help in conducting the elections. We have also created NDRF and NDMA, that is, the National Disaster Management Authority. We have seen proofs. They have worked and they have succeeded.

I would like to make a humble request to the Government. Is it possible to consider that we have something which could be appropriately named by intelligent people like the Home Minister or the Prime Minister, those who are much more capable?

Sir, I have too many ideas coming out but I will not speak forth. We can ask for advice from within the House, without the House, administrators, judiciary, business people, social leaders and even leaders of minority and majority communities. In Punjab, if the Sikhs are majority, let them say something, and let the Hindus also say something. So, we can take everybody together, put them in one boat and find out whether we can create a Communal Harmony Authority which will be able to call upon any kind of Armed Forces, any kind of governmental support in times of need. We have to talk with the State Governments, especially volatile States like Gujarat, Uttar Pradesh and others, and take them on board, consult them, take the opinion of all Parties, of all Governments, and create such Authority. ...(*Interruptions*)

SHRI NISHIKANT DUBEY (GODDA): Odisha also ...(*Interruptions*)

SHRI TATHAGATA SATPATHY : May be. Yes, we are not volatile. The hon. Member, Shri Nishikant ji has gone to Odisha many times. He knows that the BJD Government, Shri Naveen Patnaik's Government, has done exceedingly well after the bad riots in Kandhamal where we have to split ways with some people. We have had no communal violence after that.

So, my tangible suggestion is this. Can the Government consider creating an Authority, taking everybody on board and making it such an organization with teeth, with claws and with muscle so that people are scared, and something that will work?

SHRI MUTHAMSETTI SRINIVASA RAO (AVANTHI) (ANAKAPALLI): First of all, we are all Indians. Swami Vivekananda said: "This land is a *punya bhoomi, karma bhoomi* and *veda bhoomi*. So, being Parliamentarians, it is our responsibility to maintain communal harmony in this country.

Our Party, Telugu Desam Party, headed by our leader, Shri Chandrababu Naidu, ruled the combined State of Andhra Pradesh for nine years. He maintained communal harmony very well in our State. Actually, Hyderabad city also is a very sensitive city. During his tenure of nine years, there was not even a single day with curfew. Since the inception of our Party, our Party is a secular Party. So, we respect all religions and all castes.

I would humbly make an appeal to all our beloved leaders not to see communal violence on the basis of religion. According to my vision, wisdom and understanding, the first one is poverty. The second one is that our enemy countries are encouraging communal violence through some communities. So, we should understand that. I would like to tell all the political parties that we should not see religion or caste or region from the point of vote bank politics. As long as we see it from the point of vote bank politics, communal violence will keep on repeated in this country.

For information, even in the Hindu religion also, there are two groups. One is *Saivamata* and the other is *Vishnu.* Even they used to fight. But after sometime, we had overcome that.

Now, we are fighting on the basis of some religion and region. It is because of lack of awareness, lack of education and poverty. Some political parties are trying to exploit the situation to encash it in order to get benefits.

I would cite one example. In our State of Andhra Pradesh, from 1989 to 1994, the Congress party ruled. I witnessed it physically. For 45 days, there was a curfew imposed in Hyderabad. There was no real fight between the Hindus and Muslims. The only agenda behind this was that they wanted to change one Chief Minister and that is why, they had created all this situation. Due to that, many poor people both from Hindu and Muslim communities, suffered a lot. Many people were killed and many people were injured. Ultimately, they had changed their Chief Minister.

I would, therefore, request all the politicians, especially all the party heads. We are in a modern era and because of the liberalisation, globalisation and privatisation, the entire world has become a global village. So, please focus on the development issue. Our living legend, Shri Narendra Modiji is an example as to how he got the thumping majority four times consecutively in Gujarat; how the people from all the communities and religions had voted for him and how the BJP after 30 years, got the majority on its own. It was because of trust and faith on their leader. It was

not on the basis of any religion. People from all religions had voted for them.

That is why I would request all the leaders. The young leaders are there and senior leaders are there. Please try to focus on the development agenda.

Recently, our Andhra Pradesh Chief Minister, Shri N. Chandrababu Naidu got re-elected after 10 years. It was not on the basis of any caste. We were also having alliance with the BJP. All the Muslims in Andhra Pradesh had voted from him; all the Christians had voted for him. It is because Shri Chandrababu Naidu is a committed to develop the State of Andhra Pradesh.

According to Mao, there are only two religions or two parties in this world One is the 'poor' and the other is 'rich'. The rich Muslim cannot help the poor Muslim and the rich Hindu cannot help the poor Hindu.

I would sincerely appeal to all. First of all, our leaders should change the mindset. We have all to change our mindset. If any violence including communal violence happens in any State or in the country, we should make our law and order very strict, to deal with it.

Just to say that because of the BJP Government, communal violence is happening or one should blame the BJP Government because some Hindu is ruling, is not correct. If any Muslim king is ruling and a communal violence happens in his kingdom, we should blame the Muslim king. So, the rulers will not be held responsible for it.

In the end, once again, I would sincerely appeal to all the leaders to please maintain the communal harmony and focus on the development of the country. Then only, our country will progress further.

With these words, I conclude.

**श्री मोहम्मद सलीम (रायगंज) :** सभापति महोदय, आपने मुझे इतने महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। इस चर्चा का विषय यह है कि जो साप्रदायिक दंगे हैं, उनसे निपटने के लिए कौन सा मैकेनिज्म बनाया जाए।

हम सदन में चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हम सबको यह स्वीकार है कि वर्षों से पूरे देश में साप्रदायिक तनाव और फसादात ने हजारों लोगों को परेशान किया है। हम जब सदन में चर्चा करते हैं तो हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि जो भावना बाहर भड़काई जा रही है, उससे हम किस तरह से निपटें, यह हमारा मकसद है। आज जिस भावना को इस्तेमाल किया जाता है, हम सदन में अगर इस बहस को इस तरह से मोड़ें कि उसी भावना के बारे में हम पूरे देश के सामने हमारे चैनलों के माध्यम से और प्रचार माध्यमों के जरिये यह बतायें कि जनप्रतिनिधि भी उसी भावना के शिकार हो रहे हैं तो हम उससे निपटने की बजाय उसे बढ़ावा ही देंगे। अभी हमने सत्पथी जी को सुना, उन्होंने कुछ संदेश देने की कोशिश की है कि - When we talk about communal violence, particularly escalating polarisation, we must ensure that instead of provoking, we must try to restrain the emotional levels. Unfortunately, not today but most of the time we fail to give the correct signals and sometimes those signals are caught and wrongly handled.

अभी यह आरोप-प्रत्यारोप की बात नहीं है। खास कर जब यह बात आई कि नई सरकार के आने के बाद से पिछले दो महीने में घटनाएं ज्यादा बढ़ गई हैं। अभी मोदी जी जब अपनी नैशनल कांउसिल को संबोधित कर रहे थे, तो उसमें कहा गया कि यह जो सांप्रदायिक फासादात हो रहे हैं, जहां तक मैंने मीडिया में पढ़ा कि यह वोट पॉलिटिक्स से लिंक्ड है। यह हम राजनीतिज्ञों के ऊपर लांच्छन होता है। अभी कांग्रेस की अध्यक्ष महोदया ने भी यह कहा और मीडिया में भी यही कहा जा रहा है, चूंकि कुछ उप-चुनाव हैं, कुछ विधान सभाओं के चुनाव सामने आ रहे हैं, लेकिन हम यह देखते हैं कि ये पिछले कई वर्षों से लगातार कभी कम हो रहे हैं तो कभी बढ़ रहे हैं, लेकिन ये नियंत्रण में नहीं आ रहे हैं, बल्कि इसमें बढ़ोत्तरी हो रही है। यू.पी.ए. सरकार, जिसने दस साल तक हमारे देश में हुकूमत चलाई, एक सोच आई थी। प्रिवेंशन ऑफ कम्यूनल वॉयलेंस बिल लाया गया, दस साल तक उस पर चर्चा हुई, बहस हुई, स्टैण्डिंग कमेटी में विचार हुए, लेकिन यू.पी.ए.-1 और यू.पी.ए.-2 they have failed miserably to bring the Bill. उनके प्रोमिसेज़ थे कि प्रिवेंशन ऑफ कम्यूनल वॉयलेंस को कानून में लाया जाएगा। कई कानून बने, बहुत हाई स्पीड में बने, बहुत से बिल बिना चर्चा के भी पास किए गए, लेकिन इस कानून को हम नहीं ला पाए। इस सरकार से तो मैं यह मांग भी नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि यह उनका प्रोमिस भी नहीं है। ...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : No cross-talk please.

...(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦* *

SHRI ASADUDDIN OWAISI : Sir, I have a point of order. He has used my name. ...(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: No, that is not going on record.

SHRI MOHAMMAD SALIM : What about my rights? ...(*Interruptions*) सर, यह जो cult of violence है, जिस तरह से हिंसा बढ़ रही है, वह हम पूरे विश्व में भी देख रहे हैं और हमारे देश में भी देख रहे हैं। इसके पीछे कारण हैं, अगर हम उनका नियंत्रण करना चाहें, तो मैं नहीं समझता हूँ कि कानून ले आएंगे या जैसे कोई लॉ एण्ड ऑर्डर एंफोर्सिंग मशीनरी बना देंगे तो फिर पूरा नियंत्रण में आ जाएगा। उसके पीछे cult of violence के साथ-साथ आप अगर देखेंगे कि यह इंटॉलरेंस है, असहिष्णुता है। अभी यहां कभी-कभी ये भड़क जाते हैं, हम जानते हैं न कि डैमोक्रेसी में सब का अपना-अपना अलग-अलग मत है। जिस तरह से हमें बोलने का हक है, वैसे ही कुछ सुनने की भी जिम्मेदारी है। यह इस पक्ष और उस पक्ष का मामला नहीं है। यह लोकतंत्र का मंदिर है। अगर हम यहां पर अपनी बात को नहीं बोल पाएंगे, अपने मत को नहीं रख पाएंगे तो kind of majoritarianism अगर डेवलप किया जाए, चाहे वह समाज में हो, चाहे गांव में हो, चाहे सदन में कि हम जो कहते हैं, वही है और दूसरी कोई बात सुनने को नहीं मिलेगी तो फिर हमारा पहनावा, हमारी खुराक, हमारा लिबास, हमारा चेहरा, हमारी जुबान, जीने के हमारे तौर-तरीके, सब पर हमले होंगे यह देश जो है, इसमें विविधता है और उसे हमने स्वीकर किया है।

हमारी आज़ादी की लड़ाई से जो धरोहर हमें मिली हैं, साम्राज्यवाद से लड़कर हमने जो धरोहर हासिल की है, इसलिए हमारी सभ्यता में गौरव है, इस सभ्यता और संस्कृति को अगर हम किसी एक रूप का बनाएंगे, अगर एक टनल के अंदर डालेंगे तो वह गलत होगा। यह तनाव तब बढ़ता है, जब हमारी सोच में, हमारी समझ में, हमारे विचार में जम्हूरियत के प्रति, जो लोकतांत्रिक भावना है, उसमें कमी आती है। इससे एक्सट्रिमिज़्म तैयार होता है। यह जो कल्ट ऑफ वॉयलेंस है, उसको हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। उसका कोई एक धर्म नहीं है, साप्रदायिक जो है । धर्म का भी इस्तेमाल हो सकता है, जाति का भी इस्तेमाल हो सकता है, भाषा का भी इस्तेमाल हो सकता है, वे उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। हम साप्रदायिक राजनीति में यह समझते हैं कि ये इस धर्म के बहुत बड़े मानने वाले हैं, इसलिए कट्टर हैं या वे उस धर्म के बहुत बड़े मानने वाले हैं, इसलिए कट्टर हैं। दरअसल वे धर्म मानने वाले ही नहीं हैं, वे धर्म को समझते भी नहीं हैं। वे धर्म के दर्शन को नहीं समझते हैं और वे धर्म का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। एक खूनी जिस तरह से रिवाल्वर, पिस्तौल, खंजर या तलवार का इस्तेमाल करता है, उसी तरह से कुछ लोग धर्म के ठेकेदार बनकर धर्म का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

शुरूआत में तो ऐसा होता है कि काम्पटीटिव पॉलिटिक्स या काम्पटीटिव कम्युनलिज्म के लिए हम एक दूसरे को दिखाते हैं, अपने साथ लोगों को इकट्ठा करने के लिए दिखाते हैं कि देखो हम तुम्हारे धर्म के चैम्पियन हैं, क्योंकि, हम उस धर्म के साथ लड़ रहे हैं।...(व्यवधान) आप सुनिए, यह समझने की बात है। ...(व्यवधान) फिर माफी माँगोगे।...(व्यवधान) लोग एक बार माफी मांग लेते हैं तो शिक्षा ले लेते हैं। ...(व्यवधान) हम किसी एक धर्म के बारे में नहीं कह रहे हैं, हम तो यह कह रहे हैं कि यह सब कैसे होता है,...(व्यवधान) आपको यह मामला कैसे बुरा लग गया, यह आपकी बात तो नहीं है।...(व्यवधान)

महोदय, मैं सोचकर कह रहा हूं, मैं कोई नोट से पढ़कर नहीं बोल रहा हूं। यह एक वैचारिक मामला है। वे जो करते हैं, जो झगड़े होते हैं, हम नाम नहीं लेंगे, चाहे किसी भी प्रांत में हो, किसी भी जिले में हो, जैसा हो रहा है या जैसा होता आया है तो उसमें यह होता है कि पहले ये अपने धर्म के लोगों को इकट्ठा करते हैं कि हम दूसरे के साथ बदला ले रहे हैं। लेकिन पूरे विश्व का इतिहास यह कहता है, हमारे देश का इतिहास भी कहता है और आसपास के देशों में भी हम देखते हैं, जो वहां अशान्ति हो रही है, हिंसा भड़क रही है, वे अपने धर्म के ही जो सही विचार, सही सोच, सही समझ और अमन और शान्ति के पुजारी हैं, उनके साथ कट्टरपंथियों की लड़ाई होती है।

HON. CHAIRPERSON : Please conclude.

**श्री मोहम्मद सलीम :** सब जगह एक धर्म से दूसरे धर्म की लड़ाई नहीं होती है। इसे करने के लिए हमारी संस्कृति को, हमारी शिक्षा को, हमारे धर्मग्रन्थों को, हमारे धर्म के लोगों को, हमारी धार्मिक भावना को इस्तेमाल किया जा रहा है। ये हादसे इसलिए ज्यादा बढ़ रहे हैं, क्योंकि, हमारे सामने यह चुनौती ज्यादा आ रही है। मैं समझता हूं कि बदले हुए माहौल में, सिर्फ यहाँ नहीं, पूरे देश में बदला हुआ माहौल है, इसमें कुछ लोग अगर ऐसा समझते हैं कि चलो चुनाव में विकास के नाम से हो या जैसे भी प्रचार हुआ, लेकिन लोगों ने फैसला किया, उनके हक में फैसला हुआ। अभी राजनाथ सिंह जी गृह मंत्री बने हैं। अब राजनाथ सिंह जी के चाहने वाले कोई लोग, राजनाथ सिंह जी नही, अगर यह समझें कि अब हमारी मनमानी चलेगी और बाकी की नहीं चलेगी तो इससे अशान्ति भड़केगी, गड़बड़ होगी। पूना में चाहे वह मोहसिन शेख, आई.टी. प्रोफेशनल की हत्या हो, चाहे वह जम्मू के कठुआ में हो, चाहे वह उत्तर प्रदेश में हो, चाहे हरियाणा के मेवात में हो, चाहे वह किसी भी प्रदेश में हो, चाहे वह हमारे पश्चिम बंगाल में हो।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** श्री तारिक अनवर।

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): Sir, I am about to conclude....( *Interruptions*) मैं कोई रिलीजन स्पेसिफिक नहीं बोल रहा हूँ।...(व्यवधान) मैं कोई प्रदेश स्पेसिफिक नहीं बोल रहा हूँ।...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

**माननीय सभापति :** आपकी बात रिकार्ड में नहीं जा रही है।

**श्री तारिक अनवर (कटिहार):** महोदय, आज इस सदन में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर हम लोग चर्चा कर रहे हैं कि देश में साप्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए हम क्या कदम उठाने जा रहे हैं, सरकार क्या कदम उठाने जा रही है। मैं समझता हूं कि आज इस पर देश के सभी लोगों की नजर है कि यह सदन ऐसे संकट के समय में सिर्फ मूकदर्शक बनकर रहना चाहता है या सही मायने में कोई कदम उठाने की चेष्टा करता है।

महोदय, हम सब लोग जानते हैं कि किसी भी सिविलाइज्ड कंट्री की या सभ्य समाज की जो पहचान होती है, वह इस बात से होती है कि वहां जो समाज के कमजोर वर्ग के लोग हैं, दलित हैं, पिछड़े वर्ग के लोग हैं, अल्पसंख्यक हैं, उनके साथ हमारा कैसा व्यवहार होता है? और उनकी जो भी समस्याएँ हैं, उनका निदान करने के लिए हम क्या कदम उठाते हैं। आज वोट बैंक की राजनीति की बात होती है। कहा जाता है कि देश के अल्पसंख्यक, खास तौर से मुस्लिम समाज को देश की मुख्यधारा से जुड़ना चाहिए। मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। हमेशा यह कहा जाता है और तुष्टीकरण की बात कही जाती है, लेकिन अगर देखा जाए तो अभी जस्टिस सच्चर और जस्टिस रंगनाथ मिश्रा जी की रिपोर्ट आई थी। उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया कि बार-बार जो देश के अंदर यह बात उठाई जाती है कि एक वर्ग-विशेष का तुष्टीकरण हो रहा है, उसमें सच्चाई नहीं है। आज यह बात कही गई है या कही जाती है कि हम वोट बैंक की राजनीति करते हैं। वोट बैंक किसलिए होता है - चुनाव जीतने के लिए होता है। अल्पसंख्यक वोट को लेकर कोई चुनाव नहीं जीत सकता। अगर हम अल्पसंख्यक और समाज के कमज़ोर वर्ग की बात करते हैं तो इसलिए बात करते हैं कि देश की मुख्यधारा से उनको जोड़ा जाए। जब हम कहते हैं कि हमें देश को आगे बढ़ाना है, देश का विकास करना है तो समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलना पड़ेगा।

अनेकता में एकता की बात हम करते हैं। भारत एक ऐसा देश है, जिसमें दुनिया का कोई भी ऐसा धर्म नहीं है जिसके मानने वाले हमारे देश में न रहते हों। यहाँ अलग-अलग जातियाँ हैं, अलग-अलग भाषाएँ हैं, अलग-अलग संस्कृति और संस्कार हैं और उस देश को अगर एक साथ लेकर चलना है तो उसका एक ही रास्ता हो सकता है कि हम सर्वधर्म-समभाव के रास्ते पर चलें, जो महात्मा गांधी का रास्ता था, जो उन्होंने हमें सिखाया था। आज हम उस रास्ते से कहीं न कहीं भटक रहे हैं। इस बात को हम लोगों को बहुत गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है, क्योंकि, कोई भी देश आगे नहीं बढ़ सकता है, मज़बूत नहीं हो सकता है, अगर वहाँ एक समुदाय दूसरे समुदाय पर शक करे, एक दूसरे पर विश्वास न करे, डर और भय का वातावरण रहे तो वह देश कभी मज़बूत नहीं हो सकता।

हमारे प्रधान मंत्री जी का कहना है कि हमें इस देश को बहुत आगे ले जाना है और इस देश को एक महान शक्ति बनाना है। यह देश महान शक्ति तभी बनेगा, जब इस देश में रहने वाले सभी लोग मिलकर उसके लिए प्रयास करें। 'सबका साथ और सबका विकास' - क्या यह मात्र नारा है? अगर नारा नहीं है, अगर सचमुच उसमें आपका कुछ उद्देश्य है तो आपको सबको साथ लेकर चलने के लिए कदम उठाने पड़ेंगे। सिर्फ नारा देने से काम नहीं होगा। यह दिखना भी चाहिए कि आप सबको लेकर चल रहे हैं, सबका साथ आप चाहते हैं। जब तक यह दिखाई नहीं पड़ेगा, सिर्फ़ ज़बानी नारा लगाने से हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता है।

यहाँ पर हमारे होम मिनिस्टर साहब बैठे हैं। सही बात है कि उनसे बहुत उम्मीद है, आशा है। वे इस बात को दोहराते हैं कि देश के अंदर एकता रहनी चाहिए, देश के अंदर समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर हमें चलना है। इस बात पर हमें यकीन है कि आने वाले समय में, क्योंकि, यह मामला बहुत गंभीर है। हमारे कुछ साथियों ने ठीक कहा कि इसको इस नज़रिये से देखने की ज़रूरत नहीं है कि कौन किस धर्म का है और हम सब लोग यहाँ जो आए हैं, हम पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं, किसी धर्म-विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं, सिर्फ उसकी नुमाइंदगी नहीं कर रहे हैं। इसलिए हम लोगों को जब कोई बात बोलनी चाहिए तो ऐसी भाषा इस्तेमाल करनी चाहिए, जिससे यह संदेश जाए कि हमें देश की चिन्ता है। देश इंसानों से बनता है और इस देश में रहने वाले लोग इस देश के सही मायने में नागरिक हैं।

मैं अंत में यही कहूंगा कि हमें आग से नहीं खेलना चाहिए। अगर पड़ोस में आग लगती है तो हमारा भी घर जल सकता है। इसलिए ऐसा कोई क़दम न उठाएं, जिससे हमारे देश के शत्रुओं को, जो कि हमारे देश को आगे जाते हुए नहीं देखना चाहते हैं, उनको उसका लाभ मिले। एक उर्दू का शेर है, जिसे मैं आपको, खास तौर से हमारे होम मिनिस्टर राजनाथ सिंह जी, को सुनाना चाहता हूं,ो-

'कोई टूटे तो उसे सजाना सीखो, कोई रूठे तो उसे मनाना सीखो।

रिश्ते तो मिलते हैं मुक़द्दर से, बस उसे ख़ूबसूरती से निभाना सीखो।'

महोदय, मैं आपके माध्यम से यही अपील करूंगा कि देश की एकता और अखण्डता सर्वोपरि है। हम सभी लोगों को अपने राजनैतिक स्वार्थ से ऊपर उठ कर देश के बारे में सोचना चाहिए कि कैसे हम देश को आगे बढ़ाएं। देश की मुख्य समस्या, ग़रीबी, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार का उन्मूलन हो, न कि आपस में हम लोग लड़ते रहें, एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करें। हमारे देश की जो बहुत बड़ी आबादी है, वह हमारी तरफ बहुत उम्मीद से देखती है कि शायद उनकी समस्याओं का निदान होगा, शायद उनकी कठिनाइयां कम होंगी, लेकिन अगर हम इसी तरह से आपस में उलझते रहे तो यह न हमारे देश के लिए अच्छा होगा, न हमारे समाज के लिए अच्छा होगा।

**श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) :** सभापति जी, आदित्यनाथ जी के भाषण से ही पता चल जाता है कि भाजपा के कितने अच्छे दिनों की शुरूआत हुई है। इनका पूरा का पूरा भाषण इस देश के सौहार्द को बिगाड़ने पर केंद्रित है। इनके भीतर जो गहरी साजिश है, वह सब कुछ इनके भाषण में निहित है। इस बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

हम यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई की बात करने नहीं आए हैं। राजनाथ सिंह जी हम लोगों के गार्जियन हैं, वे सदन में मौजूद हैं। यहां हम ऐसे देश की एकता और धर्म की कल्पना को लेकर आए हैं, जिस धर्म के बारे में कहा जाता है- 'आत्मनो मोक्षरार्थम् जगत हिताय च।' मतलब, अपना मोक्ष और दुनिया का कल्याण हो। ऐसी भावना को ले कर हम यहां बैठते हैं, जिसमें न किसी भाषा, न किसी क्षेत्रवाद, न कोई मज़हब, न धर्म का कोई स्थान हो। सिर्फ एक साधारण-सी बात आपको सुना कर मैं अपने भाषण की शुरूआत करूंगा कि किश्तवाड़ हो या गुजरात मरते सिर्फ बेगुनाह हैं और वे मरते रहेंगे, जब तक इंसानियत का राज इस देश में इस जगह नहीं होगा।...(व्यवधान)

महोदय, सप्रदायिकता या किसी भी चीज का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिए। इन्होंने साधु-संत और मौलाना की बात कही है। मैं इन्हें कह देना चाहता हूं कि जो इनके गुरु हैं, जिस धर्मपीठ से ये आते हैं, उसकी संस्कृति और तहज़ीब में अल्पसंख्यक से ज्यादा दलित विरोधी हैं, आदिवासी और गरीब विरोधी हैं और ये कैसे हैं, देश में इनके जो स्कूल हैं, अगर आप उन स्कूलों में जाकर आरएसएस की फिलोसफी पढ़ेंगे तो हिंदुस्तान के दलित और आदिवासियों के बारे में आपको पता चलेगा...(व्यवधान) इसके लिए आपको मध्य प्रदेश जाना होगा।...(व्यवधान)

सभापति महोदय, मैं वाद-विवाद में नहीं जाऊंगा।...(व्यवधान) मैं एक बात आपसे कहना चाहता हूं कि मैं संघ का और किसी का विरोधी नहीं हूं।...(व्यवधान) मैं सब का सम्मान करता हूं।...(व्यवधान) आपने बहुत अच्छा कहा। आपको पता होना चाहिए कि गुज्जर और जाट भी भैंस का दूध ही उठाते हैं, जो यादव और राजपूत करते हैं, इसलिए आप चिंता न करें।...(व्यवधान)

महोदय, जब ये लोग हमारा वक्त ले रहे हैं तो आप मुझे अपना भाषण खत्म करने के लिए घंटी मत बजाइएगा।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** राजेश जी, आप चेयर की तरफ देख कर बात कीजिए।

**श्री राजेश रंजन :** आपके यहां भी एक सन्त बैठे हैं। लेकिन आप ने जिस सन्त और मौलाना की बात की है तो यदि आप इस देश में जाएंगे और आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए वर्गों को देखेंगे तो इसमें निश्चित रूप से दलित, आदिवासी के साथ-साथ अल्पसंख्यकों की भी वही स्थिति है। यदि कोई भी व्यवस्था या कोई भी संस्था सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े किसी समाज को उठाना चाहती है तो इसमें तुष्टीकरण की बात नहीं की जानी चाहिए, उसको किसी कम्युनिटी से नहीं जोड़ना चाहिए।...(व्यवधान)

जहां तक साधु-सन्तों का सवाल है तो मैं आपको बता दूं कि मैंने कहा कि हमारे यहां साधु हैं, सन्त भी हैं, लेकिन इस दुनिया को ...* जैसा सन्त नहीं चाहिए।...(व्यवधान) इस देश को ... * जैसा सन्त नहीं चाहिए। इस देश को ... * जैसा सन्त नहीं चाहिए।...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Names should be deleted.

**श्री राजेश रंजन :** महोदय, मैंने क्या कहा है?...(व्यवधान) इनके बारे में तो दुनिया कह रही है।...(व्यवधान)

मैंने कहा कि उधर मेरी बहन बैठी हुई हैं, मेरे भाई हैं।...(व्यवधान) योगी जी हमारे लिए अत्यंत सम्मानित हैं। वे मेरे भाई हैं। हम लोगों ने साथ-साथ काम किया है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय, मैं आपको एक बात बता देना चाहता हूं कि ये ... * लोग तो उधर बैठे हैं। ये लोग कर्मयोगी नहीं हैं।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** राजेश जी, आप चेयर को देख कर बोलिए।

**श्री राजेश रंजन :** सभापति जी, मैं एक बात बता देना चाहता हूं कि मैं कोई आपत्तिजनक बात नहीं बोलता हूं।...(व्यवधान) मैं आपको स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि भाजपा के दो दांत हैं।...(व्यवधान) आदरणीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक दिन स्पष्ट रूप से मंच पर कहा कि इस देश में भाजपा को लाने में सबसे अहम रोल अगर किसी

व्यक्ति का है तो वह ... * का है।...(व्यवधान) मैं आपको बताना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में नरेन्द्र मोदी ... * है।...(व्यवधान) ये सब लोग तो उन्हीं के भरोसे आए हैं, लेकिन हाथी का खाने वाला जो दांत है, हिन्दुस्तान में उसका नाम ... * है। ... * हिन्दुस्तान में ऐसा व्यक्ति है।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** राजेश जी, आप बाहर के किसी व्यक्ति का नाम मत लीजिए।

â€¦(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Names should be deleted.

...(*Interruptions*)

**माननीय सभापति :** प्लीज़, आप लोग बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

**प्रो. सौगत राय (दमदम) :** ये क्या बात है कि रूलिंग पार्टी किसी को बोलने नहीं देगी?...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : You are a senior member.

...(*Interruptions*)

**माननीय सभापति :** प्लीज़, आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Please sit down.

â€¦(व्यवधान)

**श्री एस.एस.अहलुवालिया (दार्जिलिंग):** राजेश रंजन जी अच्छे वक्ता हैं, अच्छी बात रख रहे हैं, किन्तु मेरा सिर्फ इतना ही कहना है कि एक ऐसे व्यक्ति का नाम नहीं लेना चाहिए, जो सदन का सदस्य नहीं है, यह परम्परा है। दूसरी बात यह है कि किसी भी सम्मानित शब्द के अपभ्रंश का प्रयोग करके उन्होंने कहा कि *â€¦* है।...(व्यवधान) यह गलत है।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** यह शब्द डिलीट करने के लिए बोला है।

â€¦(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: I have asked for deletion of these things.

...(*Interruptions*)

**श्री एस.एस.अहलुवालिया :** रंजन जी, आपको आत्म ज्ञान तिहाड़ जेल में हुआ।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति:** वह शब्द डिलीट करने के लिए बोल दिया है।

â€¦(व्यवधान)

**श्री राजेश रंजन :** सभापति महोदय, मैंने नाम विदड्रा कर लिया है।...(व्यवधान)

मैंने उनका सम्मान के साथ नाम लिया, अगर आप कहते हैं तो मैं उनको राष्ट्रीय अध्यक्ष बोलूंगा, उनका नाम नहीं लूंगा। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से दो बातें कहना चाहता हूं, न मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाले आतंकवाद की यहां बहस है, न हिन्दू तुष्टीकरण आतंकवाद की यहां बहस है। यदि हिन्दू तुष्टीकरण आतंकवाद है तो उसके भी राजनाथ सिंह जी और देश के सभी लोग विरोधी हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण के आतंकवाद के भी देश के सभी लोग विरोधी हैं, ऐसा नहीं है कि वे उसके पक्षधर हैं।...(व्यवधान) सवाल उठा है कि इतने दिनों के अंदर हो सकता है, क्या दंगा पहले नहीं हुआ है, लेकिन दंगा हुआ तो किस ने उसको सही ठहराया। किसी ने उसको जायज नहीं ठहराया। हिन्दुस्तान में वह गलत हुआ, चाहे भागलपुर में दंगा हुआ हो या जहां-कहीं भी कोई दंगा हुआ हो, उसको न आप, न हम, कोई सही नहीं कह सकता है। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या वह सही था, जो दो महीने के अंदर छः सौ दंगे हुए, क्या उनको जायज़ ठहराया जा सकता है? ...(व्यवधान) मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति:** आपका टाइम खत्म हुआ।

â€¦(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Your time is up.

...(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please sit down.

...(*Interruptions*)

**माननीय सभापति:** आपका टाइम खत्म हुआ।

â€¦(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Miss Mehbooba Mufti.

...(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: I gave you ten minutes.

...(*Interruptions*)

**सुश्री महबूबा मुफ़्ती (अनन्तनाग) :** सर, इतना शोर कर रहे हैं, हम कैसे बोलें?...(व्यवधान)

**माननीय सभापति:** मैंने आपको दस मिनट बोलने का टाइम दिया था।

â€¦(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: I have given him ten minutes.

...(*Interruptions*)

**सुश्री महबूबा मुफ़्ती :** सर, इतने शोर में हम कैसे बोलें? ...(व्यवधान)

**माननीय सभापति:** खड़जे जी, आप बोलिए।

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** मेरा यह कहना है कि रंजन जी अपना भाषण कंन्क्लूड कर रहे थे, उनको दो मिनट का समय कन्क्लूड करने के लिए दीजिए।...(व्यवधान) Let him finish. ...(*Interruptions*)

**माननीय सभापति:** रंजन जी, आप एक मिनट में कन्क्लूड करिए।

**श्री राजेश रंजन :** सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन में एक बात कहना चाहता हूं। मैं आपसे आग्रह करूंगा कि मुजफ्फरनगर की घटना, गुजरात, किश्तवाड़ या कहीं की घटना हो।...(व्यवधान) जो हिन्दुस्तान की सियासत ही नहीं, यदि 1984 के दंगों की ये बात करते हैं,...(व्यवधान) मैं इस बात को कहना चाहता हूं।...(व्यवधान)

मुजफ्फरनगर में क्या हुआ?...(व्यवधान)

**माननीय सभापति:** आपकी कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है।

...(व्यवधान)*

**18.00 hrs.**

HON. CHAIRPERSON : Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

**माननीय सभापति :** आपकी कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है। आप बैठ जाइये।

*(Interruptions) â€¦**

**माननीय सभापति :** आपकी बात रिकार्ड में नहीं जा रही है।

*(Interruptions) â€¦ **

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, it is 6 o'clock now. I have some more Members to speak on this discussion under Rule 193. What is the opinion of the House?

...(*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE (GULBARGA): Sir, not only time should be extended, reply should be given tomorrow.

SEVERAL HON. MEMBERS: Please take up 'Zero Hour'.

HON. CHAIRPERSON: Shall we take up 'Zero Hour'?

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** राजनाथ सिंह जी, आप कल प्रश्न काल के बाद रिप्लाई दे दीजिए। ...(व्यवधान)

**गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह) :** महोदय, आज चूंकि अधिकांश सम्मानित सदस्य यह चाहते हैं कि जीरो ऑवर में वे अपने क्षेत्र की समस्याओं को, अपने राज्य की समस्याओं को यहां उठा सकें, इसलिए अभी जीरो ऑवर प्रारम्भ करें, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है। ...(व्यवधान) लेकिन मैं चाहता हूँ कि यदि चर्चा प्रारम्भ हुई है तो यह चर्चा चलनी चाहिए। जितने भी माननीय सदस्य इसमें भाग लेना चाहते हैं, उन्हें भाग लेने की इजाजत आपके द्वारा मिलनी चाहिए। यह हमारी अपेक्षा है। चूंकि हमारे पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर यहाँ उपस्थित नहीं हैं, कल का क्या कार्यक्रम है, उसकी जानकारी मुझे अभी नहीं है, लेकिन कल जो भी काम होगा, ढाई-तीन बजे के बाद इसको ले लेंगे। ...(व्यवधान) कल बिजनेस एडवाइजरी कमेटी की बैठक होगी तो उस कमेटी की बैठक में इसका फैसला कर लिया जायेगा कि कल यह चर्चा कब प्रारम्भ करनी है, कब इसे समाप्त करना है और कितनी देर तक चर्चा चलानी है? इस सम्बन्ध में सारे फैसले बिजनेस एडवाइजरी कमेटी की बैठक में हो जायेंगे। ...(व्यवधान)

**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :** राजनाथ सिंह जी, मैं एक क्लेरिफिकेशन चाहता हूं। चूंकि कल बिजनेस एडवाइजरी कमेटी नहीं है, इसीलिए क्वेश्चन ऑवर के बाद 12 बजे आप यह चर्चा अगर लेते हैं तो इसे 2 बजे तक खत्म भी कर सकते हैं। अगर लंच नहीं करते हैं तो उसे भी हम छोड़ देंगे, लंच में भी इसे चलने दीजिए और इसका उत्तर उसी वक्त दे दीजिए।

**श्री राजनाथ सिंह :** खड़गे जी, हमारी एक मजबूरी है कि कल मैं 2 बजे तक यहाँ पर नहीं हूँ, इस कारण मैंने यदि समय की बात कही है तो दो बजे के बाद की बात कही है। ...(व्यवधान) आप पूरे हाउस की ओपिनियन ले लीजिए। ...(व्यवधान) यदि सभी सदस्य चाहते हैं तो आज भी इसे कर सकते हैं, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। जैसी इस सदन की सहमति हो। ...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: We will discuss this matter for another half an hour, and then take up 'Zero Hour'. Okay?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

**श्री निशिकान्त दुबे (गोड्डा) :** सभापति जी, मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है।

HON. CHAIRPERSON: Under what rule?

**श्री निशिकान्त दुबे :** रूल 352। सभापति जी, पप्पू यादव जी ने दो प्वाइंट कहे। पहली उन्होंने गुजरात दंगे की बात कही। रूल 352 का फर्स्ट कहता है कि 'â€¦ refer to any matter of fact on which a judicial decision is pending.' ...(व्यवधान) दूसरा, उन्होंने मंत्री जी के बारे में कहा। ...(व्यवधान) उनके बारे में कहा। ...(व्यवधान) उन्होंने मुजफ्फर नगर दंगो के लिए कहा। ...(व्यवधान) उन्होंने उनके बारे में कहा कि उनको मंत्री बना दिया गया।

It also says that a Member shall not 'make personal reference by way of making an allegation imputing a motive to or questioning the *bona fides* of any other Member of the House' ...(*Interruptions*) ये दोनों एक्सपंज करिए।...(व्यवधान) स्पीकर सर, ये दोनों एक्सपंज करिए। ...(व्यवधान) 352 के तहत मुज्जफरपुर दंगे का अपराधी...(व्यवधान) वह लाइन भी एक्सपंज करिए। ...(व्यवधान) (व्यवधान) उन्होंने कहा है कि अपराधी को मंत्री बना दिया।...(व्यवधान) इसलिए ये दोनों एक्सपंज करिए।...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Please take your seat.

...(*Interruptions*)

**सुश्री महबूबा मुफ़्ती (अनन्तनाग) :** सर, आज का इश्यू बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जैसा कि मेरे कई कुलिग्स ने बताए कि इसमें बेगुनाहों की जानें खामखाह जाती हैं, उनका कोई लेना-देना नहीं होता है। यह आज की बात नहीं है। यह वर्ष 1947 से होता आ रहा है। अनफोरटूनेट्ली, हम इसको इस लिए रिजॉल्व नहीं कर पाए हैं, क्योंकि हमारे यहां प्वाइंट्स स्कोरिंग होती है कि हमारे वक्त के मैसेकर में कम लोग मारे गए थे और आपके मैसेकर में ज्यादा लोग मारे गए हैं। मेरे ख्याल में यह हमारी सबसे बड़ी बदकिस्मती है कि हम असली मुद्दे की तरफ नहीं जाते हैं।

सर, मैं आपके सामने एक इंसिडेंट रखना चाहती हूं। कुछ साल पहले मैं अमेरीका गई थी। वहां के अम्बैसडर इंडिया में थे। हम उनसे मिले। हमने उनसे पूछा कि 9/11 के बाद क्या वजह है कि अमेरीका ने वहां टेररिस्ट हमले रोक दिए? क्या आपके पास बहुत स्ट्रीन्जन्ट लॉज है? उन्होंने कहा कि हमारे पास लॉज तो हैं और हमारा जो सबसे बड़ा हथियार है, वह हमारी माइनॉरिटिज हैं, हमारे मुसलमान लोग हैं, जो हमारे साथ हैं। क्या वजह है कि हमारे मुल्क में जो हमारी माइनॉरिटिज दिलखुसुस मूस्लिम्स हैं, सर, होम मिनिस्टर साहब यहां बैठे हैं, इनको आप बोलिए, आप रिकार्ड निकालिए, पिछले कई सालों से जब कश्मीर में मिलिटैंसी हुई, वहां दुनिया के कोने-कोने से लोग लड़ने के लिए आए, मगर उनमें से हमारे मूल्क का, जम्मू-कश्मीर से बाहर का कोई मुसलमान वहां मिलिटैंट बनने के लिए नहीं आया। उसके बावजूद आप देखिए, जब भी कहीं हमला होता है, 24 घंटे के अंदर तस्वीरें आती हैं कि दाढ़ी वाला यह है, यह है, इंवाल्व है। अगर आपकी इंटैलिजैंस इतनी मजबूत है तो 24 घंटे पहले आपको इसके बारे में क्यों नहीं पता चला? मैं किसी एक पार्टी की बात नहीं कर रही हूं। यह खेल हम कई सालों से देखते आ रहे हैं, जिनमें कई सारे इंकाउंटर्स, जिनमें रूलिंग पार्टी के अपने लोगों ने भी अंगुली उठाई।

सर, मेरा यह कहना है कि इंडिया की जो माइनॉरिटिज हैं, बिलखुसुस मुस्लिम्स हैं, उन्हें इंडियन नेशन से कोई शिकायत नहीं है। इंडिया के जो स्टेट्स हैं, जहां-जहां जिनकी सरकारें हैं, हमें उनसे शिकायत है। हम उनका शिकार हो गए हैं। हम एस्टैब्लिशमैंट का शिकार हो गए हैं।

सर, हमारे मूल्क के माइनॉरिटिज के सबसे बड़े एन्टरप्रेन्योर कौन हैं - आजम प्रेम जी और एम.एफ.हुसैन। आप फिल्म इंडस्ट्रीज में देखिए, आप कहीं किसी फील्ड में देखिए, जहां माइनॉरिटिज को स्टेट का मुकाबला नहीं करना पड़ा, वहां वे कैसे ग्रो होते हैं? मगर, जहां स्टेट मशीनरी आती है, it is not only about Muslims; it is about the common man. अगर कोई गरीब आदमी पुलिस स्टेशन चला जाता है तो उसके साथ क्या सलूक होता है? हमारी बच्चियों का रेप होता है। वे पुलिस स्टेशन जाती हैं तो क्या होता है? यह आलम माइनॉरिटिज का है। आप जेलों में देखिए। होम मिनिस्टर साहब यहां बैठे हैं। मैं इनके बारे में एक बात जानती हूं। मेरे फादर हमेशा कहते हैं। वी.पी. सिंह जी जब जिंदा थे, वे मुझसे कहते थे कि मुफ्ती साहब, यू.पी. में कोई मसला हुआ, हम धरने पर बैठ गए तो जो हमारे होम मिनिस्टर हैं, ये चीफ मिनिस्टर थे, इन्होंने मुझे फोन कर के बुलाया कि वी.पी.सिंह जी क्या बात है? आप आइए, मिल कर बात करते हैं, तो कहा - I was disarmed. अगर आप में इतनी एकॉमोडैशन है, इस वक्त आप हमारे होम मिनिस्टर हैं। मेरा मानना है कि हर स्टेट, अगर पुणे में लड़का मारा गया तो महाराष्ट्र स्टेट क्या कर रही थी। मगर सर आपकी कलैक्टिव रिस्पॉन्सिब्लिटी है। जैसे सलीम भाई ने कहा। नेशनल इंटीग्रैशन काउंसिल की कई मीटिंग्स हुई। Why are we reactive? आज यह रिएक्शन है। इतने दंगे हो गए, why do we not find a permanent solution? इस प्रॉब्लम को कैसे एड्रेस करें ताकि कहीं भी दंगा न हो। खुदा न खास्ता अगर दंगा हो तो लोगों को इंसाफ मिले क्योंकि दंगे तभी होते हैं जब लोगों को यह मालूम होता है कि वहां का एसएचओ, वहां का पुलिस वाला, वहां का सिस्टम, it can be anything. It can be Congress; it can be BJP; it can be SP क्योंकि कहीं न कहीं दंगे करने वालों को यह मालूम होता है कि हमारे साथ कुछ उल्टा होने वाला नहीं है। How do we do? हम इस सिस्टम को कैसे इतना मजबूत करें कि चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो, जिसके साथ गलत हो, किसी के साथ रेप हो, किसी के साथ मार-कुटाई हो, उसे इंसाफ मिले।

कई सालों से बात हो रही थी। सलीम भाई ने कहा प्रिवैंशन ऑफ कम्युनल रॉयट्स, बहुत सारे बिल लाए गए, पास किए गए। मगर इसका सिर्फ शोर हुआ। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट, चर्चा से ज्यादा उस पर अम्ल कीजिए। क्या किया? आपकी सच्चर कमेटी की रिपोर्ट बताती है कि माइनॉरिटीज़ कितने बैकवर्ड हैं। Have we done anything about it? No, क्योंकि दोनों तरफ से कहीं न कहीं एक मस्जिद गिरा रहे होते हैं, वे वोट पॉलिटिक्स करते हैं, दूसरे तमाशा देख रहे होते हैं। वे कहते हैं कि हम बाद में छाती पीटेंगे। हमें उसमें वोट मिलेंगे। India is a nation of secular people. सैकुलर पीपल को भी अनटचेबल बना दिया गया है। अब सैकुलर नाम लेते हुए भी इंसान को तकलीफ होती है। यह हमारा मूल्क चाहे हिन्दू है चाहे मुसलमान है चाहे सिख है चाहे इसाई है, वह मजहब के नाम पर बंटना नहीं चाहता। वह सड़क चाहता है, बिजली चाहता है, पानी चाहता है। They

want to live with dignity and honour. मगर हम आपस में जो स्लिंगिंग मैच कर रहे हैं, आपने यह किया, यह किया, मुझे लगता है कि डिस्कशन जिस ओर जानी चाहिए, वह नहीं हो रहा है।

पहले पार्लियामैंट और असैम्बलीज के एक बार ही इलैक्शन हो जाते थे। अनफार्चुनेटली अब असैम्बली के इलैक्शन होते रहते हैं, इसलिए दंगे भी चलते रहते हैं।

यहां कश्मीरी पंडितों की बात हुई। कविता जी ने भी बात की। 700 कश्मीरी पंडित मारे गए। 50 हजार मुसलमान भी तो मारे गए। मेरी फैमिली के लोग भी तो मारे गए।...(व्यवधान) Please do not do it. Do not make it a fight between the two of you. No. हमारी फैमिली के लोग भी मारे गए। When my father was the Home Minister, my uncle was killed; when my father was the Chief Minister, my nephew was killed. यह जरूर हुआ कि जब कश्मीरी पंडितों को वहां से निकलना पड़ा, आपको उन पर तरस आ गया, आपने उन्हें जगह दे दी। मगर जब मुसलमान वहां से निकले तो उन्हें मुल्क में जगह नहीं मिली। बोला, यह आतंकवादी है, इसे निकालो।...(व्यवधान) आज हमारे कश्मीर का शाल वाला, कारोबार करने वाला पूरे मुल्क में जाता है। अपनी चीजें बेचता है। उसे कोई शिकायत नहीं है कि मेरे मुल्क के लोग मेरे साथ ऐसे करते हैं, अगर उसे शिकायत है तो सिस्टम से है। पुलिस वाला किसी के घर जाता है, अरे कश्मीरी को यहां रखा है। इसे निकाल दो। हमारा लोगों के साथ कुछ नहीं है। लोग कश्मीर आते हैं, हम कहीं चले जाते हैं तो एक हैं। मगर इस कंट्री का जो सिस्टम है, जो हमारे स्टेट्स का सिस्टम है, उसे पीपल फ्रैंडली बनाइए, खुद ही माइनॉरिटीज़ भी आ जाएंगी, मेजॉरिटी भी आ जाएंगी।

सभापति महोदय, आपने मुझे बात करने का मौका दिया, मैं आपकी बहुत शुक्रगुजार हूं। मैंने पहले भी राजनाथ सिंह जी का नाम लिया कि इनके ऊपर बहुत ज्यादा जिम्मेदारी है क्योंकि अनफार्चुनेटली जब से यह सरकार बनी है, कुछ ऐसी चीजें हुई हैं जो नहीं होनी चाहिए। मगर आपकी तरफ से आपने लफ्ज भी नहीं खोले। मैं वही कहूंगी, कहते हैं -

न समझोगे तो मिट जाओगे हिन्दुस्तान वालो

आपकी दास्तान भी न रहेगी दास्तान में।

उसे हमें याद रखना चाहिए।

**माननीय सभापति :** निशीकांत दूबे जी के प्वाइंट ऑफ आर्डर में अगर कुछ ऑब्जैक्शनेबल है तो उसे एक्सपंज कर दिया जाए।

**श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद) :** सभापति महोदय, मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं सिर्फ चंद सवालात हिन्दुस्तान के वज़ीरे दाखिला के सामने रखना चाह रहा हूं। मैं उम्मीद करूंगा कि वे जवाब देते समय मेरे सवालात के जवाब देंगे। यहां इसलिए बहस हो रही है कि एक इफैक्टिव मकैनिज़्म को इवॉल्व किया जाए। मैं आपके जरिए वज़ीरे दाखिला से पूछना चाहूंगा कि क्या यह बात सही नहीं है कि जब फिरका वाराना फसादात होते हैं, हमारे मुल्क के लिए सबसे बड़ा खतरा फिरका वाराना फसादात हैं? क्या यह बात सही नहीं है कि जब फिरका वाराना फसादात होते हैं तो सबसे बड़ा रोल पुलिस का होता है? जब तक पुलिस में तमाम तबकों की नुमाइन्दगी नहीं होगी, चाहे अकलियतें हों, दलित हों, हम उन फसादात को रोक नहीं सकते। क्या वे मेरी बात से मुत्तफिक हैं क्योंकि हमारी पुलिस फोर्स होमोजुनस है, पार्शियल होती है, पुलिस फोर्स में तमाम तबकों की नुमाइन्दगी के लिए क्या करेंगे?

मैं वजीरे दाखिला साहब से दूसरी बात पूछना चाहता हूं कि आपकी हुकूमत ने यह ऐलान किया, इस ऐवान में बात को रखा कि इस साल आप लोग 12 लाख करोड़ रुपये टैक्सेज ऐक्सैप्ट कर रहे हैं। पिछले साल 10 लाख करोड़ रुपये था और इस साल 12 लाख करोड़ रुपये हैं, यानी दो लाख करोड़ रुपये का इजाफा आपने तखमीया लागत किया है, आपने उम्मीद रखी है। अगर यह खेल चलता रहेगा, हिन्दू-मुस्लमान को मारने का खेल चलता रहेगा, फिरका-फसादात चलते रहेंगे, तो क्या होम मिनिस्टर साहब यह आपकी जिम्मेदारी नहीं है कि दो लाख करोड़ रुपये इजाफा टैक्सेज आप जो उम्मीद कर रहे हैं, वह क्या आपको मिलेगा? यह मैं आप पर छोड़ता हूं।

मैं होम मिनिस्टर साहब से तीसरी बात पूछना चाहूंगा कि मैं बड़ा मुतमईन हूं कि बीजेपी के मोअज़्ज़िज रुक्न ने जो बात कही है, उन्होंने बहुत अच्छा किया। उन्होंने जो भी कहना था, वह हमेशा कहा। हम दस साल से सुन रहे हैं, मगर क्या वे उस गुफ्तगू से मुतफ़िक हैं? पार्टी अलग है, हुकूमत अलग है। अब आप हुकूमत में हैं। आपने दस्तूर पर हल्फ उठाया है। आपकी नजर में सब बराबर हैं, तो क्या आप उनकी बात से मुतफ़िक हैं।

मेरा चौथा सवाल यह पूछना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में जितने फसादात हुए, उनकी इंक्वायरी कमिशन की रिपोर्ट क्या कहती है? क्यों नहीं उसे लाया जाता? वजीरे दाखिला साहब, क्या यह मेरी बात सही नहीं है कि भागलपुर के इंक्वायरी कमिशन की रिपोर्ट में जिस पुलिस वाले का जिक्र किया गया, क्या आप या हुकूमत ने उसे प्रैजेंट, मेडल नहीं दिया? उस एसपी को प्रैजेंट, मेडल दिया गया।

मैं आपके माध्यम से वजीरे दाखिला साहब से पांचवा सवाल यह पूछना चाहूंगा कि क्या यह बात गलत है कि एक इशरत जहां की एनकाउंटर की फाइल आपके पास आयी है, जो आईबी का आफिसर है, उस पर आप कह रहे हैं कि केस डायरी लाकर दो? सर, क्या यह बात गलत नहीं है कि एक लोक्स स्टैंडा ही नहीं है हुकूमत के पास केस डायरी पूछने का। इस ताल्लुक से आप फैसला कब करेंगे? मैं आपके जरिये से वजीरे दाखिला से पूछना चाहूंगा कि आपके कोई गुरू हो सकते हैं। मुझे आप यह बतला दीजिए, एक बार फैसला कर दीजिए कि इस मुल्क में हिन्दुस्तानी उसी को कहेंगे, जो हिन्दू धर्म को मानता है। अगर यह बात है तो आप इस मुल्क के आईन को बदल दीजिए। आपके गुरू कहते हैं कि इस मुल्क में हिन्दू हैं।

मैं छठा सवाल हुकूमत से, वजीरे दाखिला से करना चाहता हूं कि क्या यह बात सही नहीं है कि आपकी ही सिस्टर आर्ग्नाइजेशन के लोग बयान देते हैं कि तुम गुजरात भूल गये, तो मुजफ्फरनगर को याद करो। क्या आप इससे मुत्तफिक हैं। वजीरे दाखिला साहब आप मुझे इस बारे में बताइये.

मेरा सातवां सवाल यह है कि आपके ही तनजीम के लोग कहते हैं कि हम 25 अगस्त के दिन तमाम ईसाइयों और मुसलमानों को हिन्दू धर्म में लेकर आयेंगे। क्या आप इससे मुत्तफिक हैं, यह आप मुझे बताइये। मैं आपसे पूछना चाहता हूं, क्योंकि आज आप हुकूमत कर रहे हैं। आप हुक्मरान हैं।

मेरा आठवां सवाल हुकूमत से यह है कि क्या आपकी आईबी सिर्फ मुस्लिम तनजीमों पर नजर रखेगी या फिर आप अक्सरीती तबके के तशुद्द पसंद फिरकापस्त ताकतों को जो बम बलास्ट भी किये हैं, क्या उन पर भी आप नजर रखेंगे या नहीं रखेंगे?

मेरा अगला सवाल हुकूमत से यह है कि क्या आप इस मुल्क के पुराआशुब माहौल में जहां पर कत्लो-गारतगी की जा रही है, क्या आपकी हुकूमत कौमी यकजहती काउंसिल की मीटिंग बुलायेगी, ताकि एक मुसबत पैगाम हुकूमत को दिया जा सके। मैं आखिरी सवाल आपसे कर रहा हूं, हुकूमत से कर रहा हूं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह बात सही है कि आप ऐक्तदार पर आ चुके हैं, मगर क्या कत्लो-गारतगी पर, मेरी लाशों के ऊपर आप अपने ऐक्तदार के महल को बनायेंगे? आप ऐक्तदार के महल को तो बना लेंगे, मगर याद रखिए कि मुल्क की बुनियादें कमजोर हो जायेंगी। इसलिए मैं हुकूमत से ...(व्यवधान)

महोदय, मैं तकमील कर रहा हू। ...(व्यवधान) मैं हुकूमत से पूछना चाहता हूं कि सूरत का बम बलास्ट, अक्षरधाम का बम बलास्ट, होम मिनिस्टर ने सुप्रीम कोर्ट ने स्ट्रिक्चर पास किया है, क्या आप उन पुलिस वालों के खिलाफ एक्शन लेंगे? क्या आप उनके खिलाफ एक्शन लेकर पूरे मुल्क का ऐतमदाद हासिल करेंगे? यह बुनियादी सवालात हैं।

आखिरी और अहम बात यह है कि क्या आप इस मुल्क के सेक्युलरिज्म को इसके इथोस को, इसकी रूह को बरकरार रखेंगे या इसे बर्बाद कर देंगे। ...(व्यवधान) मैं आपसे इन सवालात का जवाब चाहता हूं। ये मेरे सवालात नहीं हैं, ये किसी मुसलमान के सवाल नहीं हैं। ...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

**श्री गजानन कीर्तिकर (मुम्बई उत्तर पश्चिम):** सभापति महोदय, कम्युनल वायलेंस पर एक एफेक्टिव मैकेनिज्म लाना जरूरी है, ...(व्यवधान) इस उद्देश्य से यह चर्चा इस सदन में हो रही है। मैं शिव सेना पार्टी की ओर से मुम्बई शहर का सांसद हूँ।...(व्यवधान) मुम्बई शहर एक अंतर्राष्ट्रीय नगरी है। यहाँ दो करोड़ की आबादी है। दो करोड़ की आबादी वाले इस शहर में 10-12 वर्ष पहले बहुत दंगे-फ़साद होते थे। अभी पिछले 10 वर्षों से यह बहुत कम हो गया है, इसका मतलब है कि वहाँ के सभी राजनीतिक दलों के नेताओं, कार्यकर्त्ताओं तथा सभी क़ौम के नेताओं के मन में अच्छी भावना आ गयी है, उसके मन में बदलाव आ गया है। मुम्बई महानगरपालिका वहाँ की दो करोड़ जनता की सेवा कर रही है। इसका तीस हजार करोड़ रुपए का बजट है। वहाँ पिछले 15 वर्षों से शिव सेना और बीजेपी की सत्ता है। जब हम लोग सत्ता चलाते हैं, तो कहीं भी भेदभाव नहीं होता है। हिन्दू, मुस्लिम, और और बाकी सभी दलितों को समान दर्जा देते हैं। इतना अच्छा रिश्ता उस शहर में हम लोगों ने बनाये रखा है। इतना होने के बावजूद, मैं अपने मन की एक भावना इस सदन में उठाना चाहता हूँ।

सभापति महोदय, इस सदन में चपाती खिलाने के बारे में एक अंग्रेजी अखबार में एक बहका हुआ समाचार आया था, जो असली नहीं था। हमें निशाना बनाया गया। असल में यह सब झूठ था। यहाँ के सदस्यों ने धार्मिक भावना भड़काने का काम किया, जिसका मैं यहाँ निषेध करता हूँ। मैं कहता हूँ कि मुम्बई शहर में मुस्लिम भाइयों के प्रति इतनी अच्छी भावना है, क्योंकि जिस दिन चपाती खिलाने का मामला इस सदन में आया, उसी के दूसरे दिन महाराष्ट्र के सभी ख़ासदारों को , जहाँ इफ़्तार पार्टी चलती है, बहुत सम्मानपूर्वक उनको उधर बुलाया गया था और इस घटना का कोई असर हमारे शहर में नहीं हुआ था।

सभापति महोदय, मुम्बई शहर में नवयुवक चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, उनके मन में धार्मिक भावना कम है। उनके मन में विकास की बातें हैं। हम लोग उनका विकास कैसे करें, इस बात की ओर वहाँ के युवा वर्ग सोचते हैं। इन युवाओं के मन में कभी धार्मिक भावना नहीं भड़कायी जाती है। इसलिए वहाँ हिन्दू और मुस्लिमों में अमन होता है। मैं इस सदन को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि कम्युनल हारमनी कायम रखने के लिए शिव सेना पूरा योगदान करेगी। आज इस सदन में इस बारे में जो भी मैकेनिज्म लाया जाएगा, जो भी भारी से भारी मैकेनिज्म पर निर्णय लिया जाएगा, उसके तहत हम लोग समाज को बहकाने वाले अनैतिक लोगों पर बंधन लगा सकेंगे। मैं शिव सेना पार्टी और श्री उद्धव जी की तरफ से कहना चाहता हूँ कि यह जो धार्मिक भावना भड़काने का काम चल रहा है, उस पर आप बंधन लगाएँ, इसमें हम आपको सहयोग देंगे।

SHRI KONDA VISHWESHWAR REDDY (CHEVELLA): Respected Chairman, Sir, I thank you for the opportunity.

The discussion is about communal violence but I would like to speak more on communal harmony. I come from the land of communal harmony. I come from Telangana. Here we call it the Ganga-Yamuna *tahjeeb*. We never had communal violence until 1956 when we were a separate State. It is only after that that we had some instances and we believe, they were politically motivated. So, all the communal violence we experienced is actually political violence and we never had communal violence.

Our Deputy Chief Minister is a Muslim. We intend to give reservation to Muslims. We have Dargaahs where the entire Dargaah Board is consisting of Hindus. We have temples in my Constituency where the pearl necklace to Goddess Durga is given by the Muslim community residing there. Before that also our Rulers, before Independence, the Nizams were very secular. There are many such instances. We are inherently secular. But I am a Hindu and I am proud that I am a Hindu. I believe wherever Hindu philosophy is prevalent, there is no scope for communal violence. Let me explain.

Hinduism is an amalgamation of multiple philosophies. There are some Hindus who say that he prays to Lord Rama; some others say they pray to Lord Vishnu. But more importantly, we have conflicting beliefs and philosophies within Hinduism. We have on the one side the *Dwaita* who believes that man is here and God is somewhere there and the two are different entities and the same Hinduism has the exactly opposite philosophy who believes that there is no other God than the God within the man. We have people who are agnostic and their Hindus. In South India it is prevalent even today in my State and also in parts of Tamil Nadu where we have people who are Hindus but who do not believe in God. They are called the *Charvaks*. They go from village to village and preach no God, no God and no God. Hinduism is an amalgamation and is such a wide and

open religion that there is absolutely no scope for communal violence.

A *Dwaita* Hindu is closer to a Muslim or to a Christian than to an *Adwaita* Hindu. The problem is that in such a wide definition and such an all encompassing philosophy or a group of philosophies called Hinduism, where is the scope – unless it starts narrowing into fundamentalism.

In a charged atmosphere, if I am in a minority, the very presence of a majority makes me insecure. In order to keep communal violence away, it is not the equal responsibility of every community, the majority community has the greater responsibility and now that BJP is in power, I think, they have the capability of ensuring the responsibility provided they do not start narrowing the definition of Hinduism and something that is newly invented called the Hindutva philosophy.

**श्री बदरुद्दीन अजमल (धुबरी):** बहुत से माननीय सदस्यों ने अच्छा बोला है, मैं सबके साथ मुत्तफिक हूं। सिर्फ मुझे दुख है कि हमारे स्वामी जी, मैं उनसे शुरू नहीं करना चाहता था, मेरे भाई हैं, मैं उनको हमेशा सलाम करता हूं, हाथ मिलाता हूं। यह कम्यूनल वायलेंस पर चर्चा हो रही है।...(व्यवधान) हमारी पार्टी के लिए नौ मिनट समय एलॉटेड है।...(व्यवधान)

मैं सबसे पहले यह कहना चाहता हूं कि इस चर्चा को लाने का जो मकसद है, उसको हमारे बहुत से साथियों ने शायद गहराई से नहीं लिया है। फ़सादात इस मुल्क में हो रहे हैं, यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है।

"मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना,

हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा।

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।"

भाई आदित्यनाथ जी, मैं आपकी तारीफ कर रहा हूं, आप रिएक्शन न करें, लोगों को बोलने दें। आपकी बड़ी इज्जत है। जहां तक फ़सादात की बात है, हमारा यह मुल्क गंगा-जमुनी तहजीब का पूरी दुनिया का सबसे बड़ा सेकुलर मुल्क है। हजारों जातियों और हजारों ज़ुबान के लोग यहां रहते हैं। जब हम बाहर जाते हैं, तो हमारी इज्जत होती है। एक शान है, हिन्दुस्तान का एक वक़ार है। आज पूरी दुनिया, अमरीका जैसी ताकत भी आज अगर अंदर ही अंदर से डरती है, तो हिन्दुस्तान की ताकत से डरती है। इसकी सबसे बड़ी बदनसीबी, मैं समझता हूं, यह है कि इस घर को आग लग गयी है घर के चिराग से।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** बदरुद्दीन अजमल साहब की स्पीच के बाद ज़ीरो आवर होगा।

**श्री बदरुद्दीन अजमल :** मेरी पार्टी का नौ मिनट समय है, अगर उसमें एक मिनट बढ़ा देंगे, तो आपकी मेहरबानी होगी।

महोदय, यह मुल्क उसी वक्त तरक्की कर सकता है, उसी वक्त ताकतवर हो सकता है, जब सब एक मुट्ठी की तरह हों। हिन्दू-मुस्लिम का मसला कम से कम इस सदन में नहीं आना चाहिए। यह हिन्दू-मुसलमान का मसला नहीं है, यह फसादात तो रोकने का मसला है। जब किसी का घर उजड़ता है, तो वह किसी हिन्दू का भी घर उजड़ता है, किसी मुसलमान का भी घर उजड़ता है, सिख का भी घर उजड़ता है और ईसाई का भी घर उजड़ता है। एक दलित भाई का भी घर उजड़ता है और एक मुसलमान का भी घर उजड़ता है। मैं वह हिन्दू नहीं हो सकता है, मैं वह मुसलमान नहीं हो सकता, अपने आपसे कहता हूं कि अगर मेरे दिल में किसी दूसरे की माँ के प्रति इज्जत नहीं है, तो मैं अपनी माँ की इज्जत कभी नहीं कर सकता। इसी तरह अगर दूसरे की बहन के प्रति मेरे दिल में इज्जत नहीं है, तो मैं अपनी बहन की इज्जत नहीं कर सकता। दूसरे के बच्चों के उजड़ने का फिक्र अगर मेरे दिल में नहीं है, तो मैं अपने बच्चों के उजड़ने की फिक्र नहीं कर सकता।

हमारे सामने 15 अगस्त है। हमारे पुरखों ने कहा था – "हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल कर, इस देश को रखना मेरे बच्चो सम्भाल कर।" यह हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मेरा यह कहना है कि स्वामी जी ने जैसा कहा कि इस तरफ के लोग फसादात मुसल्सल हो रहे हैं। कोई कहता है कि मुल्क आज़ाद होने के बाद इस देश में 32,000 फसादात हुए। कोई कहता है कि 52,000 हुए और कहता है कि 27,000 हो गए। इस देश में 50 साल से ज्यादा समय तक इस तरफ के लोगों ने देश में हुकूमत की है। बड़े-बड़े कमीशन बनाए गए। आज उन कमीशंस की रिपोर्ट कहां है, मैं स्वामी जी यह बात आपकी तरफ से कह रहा हूं। लेकिन स्वामी जी मैं एक बात आपसे भी कहूंगा कि इस मामले में धर्म को बीच में लाकर, इस मुल्क के नागरिकों को तबाह और बर्बाद न किया जाए, उन्हें और न उजाड़ा जाए। उन्हें मेन स्ट्रीम में लाएं। चाहे कोई बच्चा किसी मुस्लिम के घर मुसलमान के नाम से पैदा हो रहा है, चाहे वह किसी दलित के घर पैदा हो रहा है, हकीकत यह है कि एक इन्सान पैदा हो रहा है। जिस किसी के घर में भी कोई बच्चा पैदा हो रहा है, वह हमारा भाई है, मुल्क का अंग है, उसे तालीम से संवारिए। उसे शिक्षित किया जाए और उसकी तालीम के लिए बड़े-बड़े बजट लाइए और उसे इस मुल्क में जीने का हक दीजिए।

मैं ओवैसी साहब की एक तजवीज के बारे में कहना चाहूंगा। मैं गृह मंत्री जी से आग्रह करता हूं कि सारे विभागों में सारे मजहब के लोगों की नुमाइंदगी दीजिए, मैं समझता हूं इंशाअल्लाह, जब सारे लोग एक साथ होंगे, तो किसी के साथा नाइन्साफी नहीं होगी। सर्वधर्म का एहतराम होगा, यही हमारी हिन्दुस्तान की तहजीब है। जब तक हम लोग इसकी रखवाली करेंगे, इस मुल्क में लोग खुशी से रहेंगे। आप बड़े भाई हैं, अब आप पावर में आए हैं। आप दिल खोलकर छोटे भाइयों पर रहम कीजिए, यही हमारा धर्म कहता है।

**माननीय सभापति :** यह चर्चा जारी रहेगी। अब हम शून्य काल लेते हैं।